



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

भिक्षु वाणी
मोह

जेहर सरीर में त्याग लगे,
मीठ लगे नील पांन।
जुं कर्म उदय हुये जीव रे जब,
लागे भोग डमरत समांन।
जब तक शरीर में विष व्याप्त
है, नीम के पत्ते भीटे लगते हैं।
उसी प्रकार मोह कर्म का उदय
होता है तब कामभोग अमृत
जैसे भीटे लगते हैं।

● नई दिल्ली ● वर्ष 22 ● अंक 35 ● 7 - 13 जून, 2021



प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 05-06-2021 ● पेज : 10 ● ₹ 10

डालगणी समवसरण में दीक्षा समारोह का भव्य आयोजन

साधु की हर प्रवृत्ति संयमपूर्वक होनी चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

उज्जैन, 28 मई, 2021

भैक्षवगण के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी की सन्निधि में आयोजित मुनि दीक्षा समारोह एवं श्रेणी आरोहण। समण सिद्धप्रज्ञा जी का श्रेणी आरोहण एवं मुमुक्षु अनुप्रेक्षा कुंकु चौपड़ा की साध्वी दीक्षा। पूज्यप्रवर द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण के साथ मंगल कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ।

डालगणी समवसरण में संयम प्रदाता, संयम के सुमेरु आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवान महावीर के स्मरण के साथ पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आज जैनी नगरी उज्जैन में जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ का मुनि-साध्वी दीक्षा समारोह हो रहा है।

लिखित और मौखिक आज्ञा प्राप्त करने के पश्चात नमोत्पुण्यं समणससं भगवओ महावीरस के उच्चारण के साथ दोनों को दीक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया शुरू की। भगवान महावीर एवं आचार्य भिक्षु का सश्रद्धा का स्मरण करते हुए पूर्वाचार्यों का स्मरण करते हुए साध्वीप्रमुखाजी का अभिवादन किया। मंगल स्मरण के साथ सामायिक पाठ से तीन करण तीन योग से आजीवन सामायिक चरित्र ग्रहण करवाया। सर्व सावध योग का तीन करण-तीन योग से त्याग करवाया। मुनि-साध्वी दीक्षा प्रदान करवाई।



पूज्यप्रवर ने अतीत की आलोचना आर्षवाणी और स्तुति के साथ दोनों को करवाई। एक लोगसस का ध्यान करवाया। परम पावन ने मुनि सिद्धप्रज्ञा जी का केश लुंचन संस्कार किया। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने साध्वी अनुप्रेक्षा का केश-लुंचन संस्कार किया। पूज्यप्रवर एवं साध्वीप्रमुखाश्री जी ने रजोहरण आर्षवाणी के साथ प्रदान करवाया।

मुनि सिद्धप्रज्ञा जी को प्रेरणा प्रदान

करते हुए फरमाया कि इतने दिनों तुमने समण रूप में सेवा दी है। संतों को सहयोग प्रदान करवाया है। कितने वर्षों से अकेले भी रहे हो। बहुत अच्छी सेवा की भावना भी रही है। प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, देश-विदेश की यात्राएँ आदि का भी वर्षों तक काम कर अपनी सेवा दी है। समण श्रेणी में अखंड रूप से रहे हो। अब नया प्रस्थान हो गया है। मुनि रूप में भी अपनी खूब अच्छी साधना, सेवा करते रहे।



स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना। खूब अच्छे वर्द्धमान बने रहो। खूब अच्छे धर्मशासन की सेवा करते रहो। उज्जैन जो डालगणी से जुड़ा हुआ है, उसका भी नाम रोशन करते रहो।

हमारे सतमाचार्य पूज्य डालगणी जिन्हें मैं यदा-कदा तेजस्वी आचार्य कहता रहता हूँ। डालगणी हमारे विलक्षण आचार्य थे।

समण सिद्धप्रज्ञा का नाम अब मुनि सिद्धप्रज्ञा, मुमुक्षु अनुप्रेक्षा को साध्वी अवन्तिकप्रभा नाम दिया। अवन्तिक यानी उज्जैन।

अब तुम साधु-साध्वी बन गए हो। साधु जीवन के अनुरूप अब आवरण रहे। कैसे चलना-संयम से चलना। बोलना, बैठना, खाना। सारी प्रवृत्तियाँ संयम से हो। समता से सहन करना। संयमपूर्वक साधना करते रहो।

(श्रेष्ठ पृष्ठ 2 पर)

जीवन में अनुकूलतानुसार स्वाध्याय करना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

लोहामाकोटि, 2 जून, 2021

आत्मरमण साधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि चार बातें शास्त्र के श्लोक में बताई गई हैं। तीन बातें नकारात्मक रूप में हैं, एक अंतिम बात विधायक-सकारात्मक रूप में है। नकारात्मक रूप में तीन बातों में से पहली बात बताई गई—नींद को बहुमान न दें। उपयोग में लेना एक बात होती है। बहुमान देना अलग बात हो जाती है।

बहुमान हर किसी को नहीं मिलना चाहिए। उपयोग लेना अलग है, पर सबको बहुमान देना आवश्यक भी नहीं और शायद उचित भी नहीं। भोजन आदि गौण चीजें हैं, मुख्य है सेवा देना। जो मुख्य का स्थान

है, वहाँ गौण बैठ जाए तो अव्यवस्था हो सकती है। गुरु का अपना स्थान है, शिष्यों का अपना स्थान है। गुरु का स्थान मुख्य है।

नींद कोई मुख्य चीज नहीं है, वह हमारा साध्य नहीं है। वो सहायक है। मूल हमारा अच्छा काम आध्यात्मिक, सेवा, स्वाध्याय आदि मुख्य है। नींद को बहुमान न दें। नींद भी तरीके से लें। अच्छी नींद भी आना एक स्वस्थता और सुख का आयाम है। स्वाभाविक रूप में नींद आ जाए वो अच्छी हो सकती है। नींद लेते समय भी साधना का प्रयोग होता रहे तो नींद साधनामय हो सकती है।

दूसरा नकारात्मक सूत्र है जिसमें निषेध की बात है—संप्रास-अद्वैतस्य ज्यादा

हास्य न करें। ज्यादा नहीं हँसना चाहिए, हँसने में भी एक सीमा रहनी चाहिए। हँसने में भी स्थिति का ध्यान रखना चाहिए। किसी की गलती देखकर न हँसें। चलने वाला स्वलित हो सकता है, प्रमाद से कोई गिर भी जाए। गिर रहा है, तो उसको कोई संभाल ले। गिर गया तो उसको संभाल लें, हँसी न उड़ाएँ, गलत बात है।

साधु-सज्जन पुरुष गिरे हुए को उठाता है। विद्वान साधु है, बोलने में कहीं गलती हो गई, उसे देखकर हँसे नहीं, उपहास मत करो। मौके पर संकेत कर दो। गलती तो बड़ों से भी हो सकती है पर उपहास न करें।

तीसरी बात है—मैथुन की कथाओं में रमण न करें या फालतू बातों में रस न लें।

वाणी का बढ़िया उपयोग करें। ये तीन निषेधात्मक निर्देश आ गए। चौथी सकारात्मक बात है, सदा स्वाध्याय में रत रहो। नींद ज्यादा लेना, हँसी-मजाक में समय लगाने या मैथुन की बातों में रमण करने से स्वाध्याय में बाधा आ सकती है।

ज्ञान विकास का एक सुंदर माध्यम है—स्वाध्याय। गुहस्थ भी आवश्यक कार्यों के सिवा थोड़ा समय स्वाध्याय में निकाल सके, ऐसा प्रयास करना चाहिए। थोड़ा-थोड़ा पढ़ने से भी हमारा ज्ञान विकसित हो सकता है। सामायिक के लिए समय निकालें तो सामायिक में भी स्वाध्याय हो सकता है। प्रवचन सुनना भी एक तरह का स्वाध्याय है। दोगुना लाभ सामायिक में

हो जाता है।

स्वाध्याय कंठस्थ ज्ञान का परिवर्तन के रूप में भी हो सकता है। जो कंठस्थ है, उसका चितारना होता रहे तो ज्ञान पक्का-मजबूत रह सकता है। चितारना न होने से ज्ञान विस्मृति के गर्त में गिर सकता है।

बालावस्था ज्ञानार्जन का समय है। शैशव में विधाओं का विकास होना चाहिए। गुहस्थ भी ज्ञान को कंठस्थ करने का प्रयास करें। हमें जीवन में जितनी अनुकूलता हो, स्वाध्याय करने का प्रयास करना चाहिए।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में इंद्रचंद्र पटेल ने अपनी भावना रखी। पूज्यप्रवर का आज का प्रवास इन्हीं के घर में हो रहा है।



मानव जीवन का धार्मिक दृष्टि से लाभ उठाने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

केसूरनगर, 3 जून, 2021

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः विहार कर मालवा क्षेत्र के केसूरनगर में पधारे। केसूरनगर से अनेक साधु-साधिन्याँ धर्मसंघ में दीक्षित हैं। मुनि विरधीचंद जी भी केसूरनगर से ही थे। परम पावन ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन आगमों में एक आगम उत्तराध्ययन। उसका दसवाँ अध्ययन और उसके श्लोक में बताया गया है कि यह मनुष्य भव दुर्लभ है। संसारी प्राणियों को लंबे काल तक भी यह मनुष्य भव नहीं मिलता है।

कर्मों को विपाक अपने आपमें गाढ़ा होते हैं। गौतम! समय मात्र भी प्रमाद मत करो। जो मानव जीवन दुर्लभ बताया गया है, वह मानव जीवन गौतम को तो उपलब्ध था। हम सभी को भी वह दुर्लभ कहलाने वाला मानव भव अभी उपलब्ध है, जो सुलब्ध-उपलब्ध है, उसका हम लाभ उठाएँ।

चार चीजें संसार में दुर्लभ बताई गई हैं—मनुष्य जन्म, श्रुति धर्म का श्रवण करना, श्रद्धा और संयम में पराक्रम। चार चीजों में पहली चीज है—मनुष्य जन्म दुर्लभ है। ८४ लाख योनियाँ बताई गई हैं, उसमें यह मनुष्य की योनी है, वह कितने जीवों को तो अनंतकाल बीत गया, पर नहीं मिला। जैसे अय्यवहार राशि के जीव। वे तो वनस्पतिक्रम में बेटे हैं। द्विन्द्रिय-त्रिन्द्रिय भी नहीं बने।

प्राणियों में सबसे कम विकसित प्राणी एकेंद्रिय होते हैं। सजी पंचेंद्रिय सबसे ज्यादा

विकसित होते हैं। असंजी पंचेंद्रिय भी अविकसित प्राणी होते हैं। हमारी दुनिया में ऐसा लगता है कि धर्म की ज्यादा साधना मन वाला प्राणी मनुष्य ज्यादा कर सकता है। ये समनस्क मनुष्य साधना करते-करते केवलज्ञानी बन मोक्ष जा सकते हैं।

ऐसा मानव जीवन जो कितना मूल्यवान-अमूल्य है कि इतनी ऊँची साधना केवल संजी मनुष्य ही कर सकता है। जिसको ये प्राप्त है, उनको इसका लाभ उठाना चाहिए। जो आदमी हिंसा आदि पाप-वृत्ति करता है, वह प्राप्त मनुष्य जन्म को खो देता है। जो प्रमत मनुष्य इस मनुष्य जन्म को व्यर्थ गँवाता है, वो आदमी मानो सोने के थाल में घर का कचरा डालता है। जैसे आदमी को अमृत प्राप्त हो गया है, वो उसे न स्वयं पीता है, न दूसरों को पिलाता है, बल्कि कीचड़ लगे पैरों को धोने में काम लेता है।

मानो एक श्रेष्ठ हाथी प्राप्त है, उस पर सवारी न कर लकड़ियों का भार ढोता है। एक आदमी को चिंतामणि रत्न मिल गया, उसका उपयोग आशा-चिंतन में न कर कौआ उड़ाने में करता है। ये काम करने वाला आदमी नादान-मूर्ख है। वैसे ही मनुष्य जन्म पाकर पापों में जाने वाला आदमी मूर्ख है।

जिनको मानव जीवन मिला हुआ है, वो स्थायी तो है नहीं। कभी न कभी तो ये मानव जीवन पुरा होता है। वापस क्या पता, कैसे मिलेगा? यह मानव जीवन कैसे दुर्लभ है, यह एक चक्रवर्ती की खीर के

दृष्टांत से समझाया। कहीं चक्रवर्ती की खीर और कहीं साधारण भोजन। वापस कब चक्रवर्ती के घर का नंबर आएगा। इसी तरह मानव जीवन को दिया तो फिर न जाने वापस कब मिलेगा।

इस मानव जीवन का हम धार्मिक दृष्टि से लाभ उठाने का प्रयास करें। जीवन में सम्यक् और चारित्र की अच्छी आराधना हो जाए। जीवन में आदमी पापों से बचने का प्रयास करे। गृहस्थ में अनुग्रहों की आराधना की जा सकती है। छोटे-छोटे व्रत ग्रहण कर यह मानव जीवन दुर्लभ मिला हुआ है, उसका खूब लाभ उठाएँ। हम मानव जीवन का अच्छा लाभ उठाने का प्रयास करें और अच्छी बात-संत वाणी जहाँ सुनने का या पढ़ने का मौका मिले, अच्छा काम करें और दुर्लभ मानव जीवन को सफल बनाने का प्रयास करें, सुफल बनाएँ।

अहिंसा यात्रा और मालवा यात्रा के दौरान इस मध्य प्रदेश में आज केसूर आए हैं। अनेक चारित्रमाएँ हमारे धर्मसंघ की केसूर से संबंधित हैं। यहाँ की जनता में भी खूब धार्मिक भावना अच्छे संस्कार पुंठ रहे। पूज्यप्रवर के स्वागत एवं अभिवादन में महिला मंडल अध्यक्ष शांता देवी टेबा, मंत्री संगीता बम्बोली, कन्या मंडल, किशोर मंडल से अनुराग बम्बोली, श्रुति चौधरी, संजु टेबा, तेयुप से संदीप टेबा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष विमल पितलिया, मंत्री अनिल चौधरी, अशोक चौधरी, संजय टेबा, महेश बम्बोरी (मालवा सभा से) ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

साधना के क्षेत्र में उपादान और निमित्त दोनों महत्त्वपूर्ण हैं : आचार्यश्री महाश्रमण बड़नगर, 9 जून, 2021

मालवा क्षेत्र का एक नगर बड़नगर जहाँ हमारे धर्मसंघ के महातपस्वी मुनि कोदर जी का जन्म हुआ था। पूज्य जयाचार्य ने अ भि रा शि को नमः का जो मंत्र दिया था वे ही कोदरजी इस बड़नगर धरा से थे। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी का आज उन महातपस्वी मुनि कोदरजी की पावन जन्मभूमि पर पदार्पण हुआ है।

परम पावन ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे पाँच-पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। इंद्रियों के विषय यदा-कदा इंद्रियों के द्वारा गृहीत भी होते रहते हैं। शास्त्रकार ने एक महत्त्वपूर्ण बात बताई है कि ये पदार्थ है काम-भोग, शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श ये समता भाव को पैदा नहीं करते। ये पदार्थ न ही मन में विकृति को पैदा कर सकते हैं। परंतु जो व्यक्ति जो प्राणी, जो आत्मा उन विषयों के प्रति, काम भोगों के प्रति प्रदेष्टव्य करता है या परिग्रहण-राग करता है, वह अपने मोह के कारण विकृति को प्राप्त होता है।

हम अनेकांत-सापेक्ष दृष्टि से ध्यान दें। दो शब्द हैं—उपादान और निमित्त। कार्य होता है, तो उसकी निष्पत्ति की पृष्ठभूमि में कारण भी होता है। कारण के बिना प्रायः कार्य हो नहीं सकता। घड़ा बना है, तो कारण भी है। मिट्टी, कुंभकार, साधन सामग्री कारण है। कारण के मुख्य दो प्रकार हैं—एक उपादान कारण, दूसरा निमित्त कारण।

पदार्थ चित्त में विकृति लाने के उपादान कारण नहीं हैं, मूल कारण नहीं हैं। वे निमित्त बन सकते हैं। पहले उपादान हो तो निमित्त का बल चलेगा। अकेला निमित्त कुछ नहीं कर सकता। मिट्टी होगी तो ही घड़ा बनेगा। हमारे जीवन में हम उपादान और निमित्त इनको देख सकते हैं।

हम आज मालवा क्षेत्र के बड़नगर आए हैं। पूज्य कालुगणी के जीवन काल का अंतिम मर्यादा महोत्सव का क्षेत्र है। बड़नगर के हमारे विशिष्ट तपस्वी मुनि कोदरजी स्वामी से जुड़ी हुई यह बड़नगर की भूमि। कोदरजी स्वामी का नाम तो कितने लोगों की जवान पर आता होगा। ऊँ अ भि रा शि को नमः को नमः एक मंत्र सा बना हुआ है। इसमें ये कोदर जी स्वामी का नाम है। मैं कभी-कभी दोहा भी बोलता हूँ—

कोदर तपस्वी रामसुख, पीथल मोती हो।

भोप दीप, सुख सामजी, भिक्खु सिक्ख बड़वीर।

मुनि कोदरजी हमारे सम्माननीय-स्मरणीय विशिष्ट संत थे। १४-१५ वर्ष के संयम-पर्याय में कितनी तपस्याएँ कर लीं। वेणीरामजी स्वामी जैसे संत का निमित्त मिला और वैराग्य उपपन्न हो गया। संतों का संयोग मिलना निमित्त है। मूल उपादान है, भीतर का क्षयोपशम का होना।

उपादान तो भीतर का भाव है या वीतराग की साधना है। शास्त्रकार की बात है कि उपादान की दृष्टि से ये काम भोग विकृति पैदा नहीं कर सकते। पर निमित्त तो बन सकते हैं। निमित्तों से भी बचाव रखो। निमित्त की भूमिका पदार्थ की भूमिका-बल रह सकती है।

साधना के क्षेत्र में उपादान का बड़ा महत्त्व है, पर निमित्त भी चाहिए। यह एक दृष्टांत से समझाया कि स्थिति-निमित्त का अंतर है। साधना है, तो शेर भी भयभीत नहीं कर सकता। हम अपने जीवन में निमित्त और उपादान को अच्छी तरह समझ लेते हैं, तो जीवन के विभिन्न पहलुओं की हम गहराई से व्याख्या कर सकते हैं। गहराई से समझ सकते हैं और अपने जीवन को सही दिशा में संभवतः आगे भी बढ़ा सकते हैं।

आज बड़नगर आना हुआ है। खूब यहाँ धार्मिक साधना चलती रहे। लोगों में खूब अच्छी भावना बनी रहे। सम्यक् दीक्षा ग्रहण करवाएँ।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि महापुरुष की सन्निधि दुर्लभ है। संत दर्शन और संत कथा होना दुर्लभ है, आज बड़नगर में दोनों चीजें एक साथ उपलब्ध हो रही हैं। संतों का सान्निध्य दिशा सूचक यंत्र की तरह होता है। हमें मार्गदर्शन मिलता है। संत पुरुष सोए पुरुषों की चेतना को जागृत कर देते हैं।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि जब कथाय तीव्र होते हैं, तो व्यक्ति का दिमाग गरम हो जाता है। तीव्र कथाय के तीन लक्षण हैं—आत्मप्रशंसा, पुण्य में दोष दर्शन और वैर को चिरकाल तक धारण करना। हम अहंकार, द्विद्वेषण और वैरभाव से दूर रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ से राजकुमार जैन, विस्तुति जैन संघ से शांतिलाल गोखरू, आदिश्वर श्वेतांबर जैन संघ से मनीषराज कटारिया, मारू परिवार से ज्योति मारू व बहनों ने गीत, श्रेयांस मारू, गौरव मारू, चौधरी परिवार की बहनें। अमित रति मारू ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि मनन कुमार जी ने किया।

♦ व्यक्ति पुण्योदय के दिनों में भी प्रमाद में न जाए, जागरूक रहे, सत्ता, संपत्ति आदि का दुरुपयोग न करे।

— आचार्यश्री महाश्रमण

साधु की हर प्रवृत्ति संयमपूर्वक होनी...

(प्रथम पृष्ठ का क्षेत्र)

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद के जीवन प्रसंग को समझते हुए कहा कि दीक्षा अपने आपको पहचानने, जानने और पाने की प्रक्रिया है। भारतीय संस्कृति में दीक्षा का बहुत बड़ा महत्त्व है। दीक्षा की भावना के लिए सबसे पहले वैराग्य होना चाहिए। जिस व्यक्ति को संसार का बोध हो जाता है, जन्म-मरण की प्रक्रिया क्या है, जीवन में कितने दुःख आ सकते हैं, संसार से विरक्ति होने पर मोक्ष मार्ग से अनुराग हो जाता है। सत्य का साक्षात्कार करने का संकल्प जगता है, उसे वैराग्य हो जाता है।

दीक्षा एक प्रकार की क्रांति है। इससे बाह्य और आंतरिक रूपांतरण हो जाता है। जब त्रोटों का कवच पहन लिया जाता है, फिर उसे कहीं भय नहीं रहता। जो व्यक्ति आत्मा के साथ युद्ध करता है, वह स्वयं सुखी व सुरक्षित हो जाता है और वह दूसरों को भी सुरक्षित रखने का आश्वासन देता है। जैन श्वेतांबर तेरापंथ की दीक्षा तो विलक्षण होती है। तेरापंथ में संख्या का नहीं गुणवत्ता का महत्त्व है। यहाँ शिक्षा-परीक्षा के बाद दीक्षा होती है।

मुख्य मुनिप्रवर ने कहा कि यह हमारे धर्मसंघ का सौभाग्य है कि हमें डालगणी जैसे आचार्य मिले। उज्जैनयी नगरी वास्तव में भाग्यशाली है।

मुख्यनियोजिका जी ने कहा कि डालगणी जी विलक्षण संत थे। डालगणी ने जो यात्राएँ की थीं वो बहुत प्रभावक यात्राएँ रही थीं। मुनि जीवन में तो उन्हें कच्छपूजजी के नाम से जाना जाता था।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि डालगणी मुनि अवस्था में भी निर्लिप्त-अनासक्त रहने वाले थे। मुनि जीवन में डालगणी ने यात्राओं में अच्छा प्रभाव छोड़ा था। मुझे सात्त्विक प्रसन्नता हो रही है कि मुझे साध्वी अवस्था में भी उज्जैन आने का सौभाग्य मिला है।

दीक्षा समारोह के प्रारंभ में मुमुक्षु मनीषा चौपड़ा ने समण सिद्धप्रज्ञ जी एवं मुमुक्षु अनुप्रेक्षा चौपड़ा का परिचय दिया। मुमुक्षु अनुप्रेक्षा के पिता डूंगरमलजी एवं माताश्री जशोदा चौपड़ा ने आज्ञा-पत्र पूज्यप्रवर के चरणों में समर्पित किया।

समण सिद्धप्रज्ञ जी ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि ४० वर्ष बाद आज भावना सफल हो रही है। उज्जैन में तेरापंथ धर्मसंघ के ८ आचार्यों का पदार्पण हुआ है, पर दीक्षा प्रथम बार आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा हो रही है। समणजी ने अपने जीवन के २५ वर्ष समण श्रेणी के अनुभव प्रस्तुत किए। मुमुक्षु अनुप्रेक्षा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि आपश्री के चरणों में अपनी चोटी समर्पित करने जा रही हूँ। जब तक मैं अपनी लक्षित मंजिल को प्राप्त न कर लूँ आप मेरी चोटी पकड़े रहना।

पूज्यप्रवर के स्वागत में उत्कर्ष आंचलिया, अभय बोरदिया, कन्या मंडल, खटपटिया परिवार, तेयुप अध्यक्ष मधुर आच्छ, तेरापंथ महिला मंडल, आज्ञा पिपाड़ा, सोहनलाल आच्छ, सुनीता सेटिया, अनीता संजय मेहता, मोहित मेहता, शुभम बोरदिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने उज्जैनवासियों को सम्यक् दीक्षा ग्रहण करवाई।



शरीर, वाणी और मन का सदुपयोग करें : आचार्यश्री महाश्रमण

रसुलाबाद, ३१ मई, २०२१

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः इंदौरिया ग्राम से विहार करके रसुलाबाद के संस्कृत ग्लोबल स्कूल में पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए संस्कृति के संवर्धन और संरक्षक ने फरमाया कि हमारे जीवन में केंद्रीय तत्त्व है—आत्मा। आत्मा मूल तत्त्व है। आत्मा है तो फिर शरीर भी है। वाणी और मन भी है।

शरीर से जब आत्मा निकल जाती है, तब शरीर में कोई प्राणवत्ता नहीं रहती। इसका मतलब है कि आत्मा के होने पर ही शरीर का एक प्राण तत्त्वमय रूप है। वाणी और मन है। आत्मा और शरीर का योग ही जीवन है। जहाँ आत्मा अलग, शरीर अलग हो गया तो मृत्यु हो गई। हमेशा के लिए आत्मा शरीर से अलग हो जाए, पुनर्जन्म न रहे तो मोक्ष हो जाता है।

हमारे जीवन में ये तीन साधन हैं, प्रवृत्ति के लिए शरीर वाणी और मन। शरीर हमारा एक कर्मकर-कार्य का साधन हो गया। वाणी-भाषा के द्वारा हम बोलते हैं, विचारों का आदान-प्रदान कर लेते हैं। बोलना और लिखना दोनों भाषा हैं। लिखकर भी हम अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। इसी प्रकार दूसरों को सुनकर या उनके साहित्य आदि को पढ़कर हम उनके विचार जान सकते हैं।

भाषा एक सशक्त माध्यम है विचार के आदान-प्रदान का। भाषा एक रथ है और विचार उसमें बैठने वाला महाराजा है। भाषा रूपी रथ पर विचार-रूपी महाराजा यात्रा करता है। भाषा की लब्धि हमें प्राप्त है। हमारा बोलना कैसा होना चाहिए, यह एक महत्वपूर्ण बात है। क्यों बोलना, क्या बोलना और कैसे बोलना ये तीन चीजें धातव्य हैं। इन तीन प्रश्नों का उत्तर पाकर बोलते हैं, तो हमारा बोलना अच्छा होता है।

क्यों बोलें? मेरे बोलने से दूसरों को लाभ मिले। जहाँ हमें लगे मेरे बोलने से लाभ होने की संभावना नहीं है, वहाँ नहीं बोलना चाहिए। दूसरों और अपनी भलाई व प्रयोजन हो तो बोलना चाहिए। निष्प्रयोजन नहीं बोलना चाहिए। बोलना भी अच्छा है, तो न बोलना भी अच्छा है। बोलने और न बोलने में विवेक रखना बड़ी बात है। यह अकबर-बीरबल के दृष्टांत से समझाया कि मुखौं से पल्ला पड़ जाए तो मौन रहना चाहिए।

जो पढ़े-लिखे न हों, अपंडित हो उनकी सभा में न बोलना मौन ही उनका आभूषण है। हमारे ये शब्द भी बड़े महत्वपूर्ण होते हैं। हमारे शब्द कहीं निकले यह धातव्य है। ये हमारे होट हैं, ये दरवाजे हैं। ये दरवाजे प्रायः तो बंद रहें, जहाँ जरूरत हो वहाँ खोलने चाहिए।

एक दोहा है—

**वचन रतन, मुख कोट है,
होट कपाट बनाय।
समझ-समझ हरफ काढ़िये,
मत परवश पड़जाय।।**

हम शब्दों को समझकर निकालें, वरना समस्या हो सकती है। जैसे कंजूस आदमी पैसा समझ-समझकर खर्च करता है। बोलने में हमें कंजूस बनकर रहना चाहिए। अनावश्यक नहीं बोलना भी मौन होता है।

क्या बोलें? वह बोलें जिसमें यथार्थ हो। झूठी बात न बोलें। तथ्यपूर्ण बात बोलें। सेठ और चारण के दृष्टांत से समझाया कि बोलकर एक-दूसरे को राजी कर दिया। लेना-देना कुछ नहीं। जो कर सकें वो बोलें, मोटी वाणी बोलें।

**तुलसी मीठे वचन से,
सुख उपजत विह्वोर।
वशीकरण यह मंत्र है,
तजदें वचन कठोर।।**

सत्य बालो, प्रिय बालो। अप्रिय सत्य भी मत बालो और प्रिय असत्य भी मत बालो। ये शाश्वत धर्म हैं। यथार्थ और मिष्ट बोलें।

तीसरा प्रश्न है—कैसे बोलें? आदमी को बोलने का तरीका भी अच्छा रखना चाहिए। न तो बहुत जल्दीबाजी में बोलें, एकदम धीरे से न बोलें। मध्यम रूप में बोलें ताकि बात सामने वाले के समझ में आ जाए। न ज्यादा धीरे बोलें न ज्यादा तेज बोलें। मौका देखकर तेज या धीरे बोलना चाहिए। संतुलित रूप में बोलना चाहिए।

चाहिए।

किसी गोपनीय बात को बनानी है, तो धीरे से बोल दें। पर ज्यादा लोगों के बीच बोलें तो धीरे बोलने से नहीं सुनाई देगा। वक्ता को विवेक करके बोलना चाहिए। अवसर देखकर बात करनी चाहिए।
क्यों, क्या और कैसे, इन तीन बातों पर आदमी मनन कर बोलता है, तो उसका बोलना अच्छा हो सकता है। एक सूत्र है—वाणी हमारे कार्य का साधन है। इसी तरह मन से कल्याणकारी सकारात्मक चिंतन करें। किसी के बारे में चुरा न सोचें। शरीर, वाणी और मन का हम बढ़िया उपयोग करते हैं, तो हमारे जीवन का बढ़िया उपयोग हो सकता है।

हम लोग का अहिंसा यात्रा के अंतर्गत इस संस्कृति ग्लोबल स्कूल में आना हुआ है। यहाँ जो विद्यार्थी पढ़ते हैं, उनको और ज्ञान मिले उसके साथ संस्कृति का भी अच्छा ज्ञान मिले। अहिंसा, नैतिकता, नशामुक्ति संयम रहे। ये हमारे अध्यात्म की संस्कृति के तत्त्व हैं। इनका भी शिक्षण-प्रशिक्षण विद्यार्थियों को मिलता रहे। ये पढ़ने वाला विद्यार्थी विद्वान ही नहीं संस्कृतिमान भी होगा। विधायक-राजनीति से होना ये भी एक सेवा है। राजनीति में शुद्धता रहे। खूब अच्छा धार्मिक-आध्यात्मिक कार्य करते हैं।

स्कूल के मालिक पूर्व विधायक विरेंद्र सिसोदिया ने पूज्यप्रवर के स्वगत में अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि मनन कुमार जी ने किया।

सम्यक् पुरुषार्थ से लक्षित मंजिल प्राप्त कर सकते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

चीकली, ३० मई, २०२१

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ आज प्रातः विहार कर चीकली ग्राम पधारे। आत्म-साक्षात्कार के प्रेरक पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमारे पास पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। पाँच कर्मेन्द्रियाँ भी अलग बताई गई हैं। ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच हैं—श्रोत, चक्षु, प्राण, रसन और स्पर्शन। इन पाँच इंद्रियों के माध्यम से हमें विषयों का ज्ञान होता है। विषयों का ग्रहण होता है।

इंद्रिय, विजय और व्यापार-प्रवृत्ति तीन चीजें हैं। ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा विषय का ग्रहण होना है और फिर उनका बोध हो जाता है। ज्ञानेन्द्रियों द्वारा भोग भी होता है। ज्ञान है, तो भोग भी हो सकता है। दो शब्द—काम और भोग। जब काम और भोग का साथ में प्रयोग करें तो इंद्रियों के संदर्भ में श्रोतेन्द्रिय और चक्षुरिन्द्रिय से काम होता है। प्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय से भोग होता है।

तत्त्वज्ञान में बताया गया है कि ये पाँच इंद्रियाँ हैं, इनमें दो इंद्रियाँ तो कामी हैं, और तीन इंद्रियाँ भोगी हैं। कान में शब्द पड़ता है, हमने सुन लिया। चक्षु से दूर से रूप को देख लिया, पर रूप आँख में गिरता नहीं है तो स्पर्श-भोग नहीं हुआ काम हो गया। गंध है, वो नाक के अंदर जाती है, हमें अनुभव होता है। खाना अंदर जाता है तो हमें अनुभव हो जाता है, वो भोग हो गया। त्वचा स्पर्श से भी भोग हो जाता है।

हमारी ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, जो ज्ञान का माध्यम है, इन पाँचों इंद्रियों में दो इंद्रियाँ ज्ञान का ज्यादा माध्यम बनती हैं। वे हैं—श्रोतेन्द्रिय और चक्षुरिन्द्रिय। श्रोत से हम

सुनते हैं, कितनी बातों का ज्ञान हो जाता है। आँख से देखने से भी कितनी बातों की जानकारी हो जाती है। कान से सुना फिर उसको आँख से देख लिया तो बात की जानकारी बहुत प्रामाणिक और पुष्ट हो सकती है।

कानों से सुनने से कानों को तृप्ति मिल गई, पर साक्षात् दर्शन करने से और अधिक तृप्ति हो जाती है। बात पुष्ट हो जाती है। आदमी सुनकर कल्याण को जानता है और सुनकर पाप को भी जान लेता है। सुनने-जानने के बाद श्रेय है, हितकर है, कल्याणकारी है, वो आचरण करना चाहिए।

दो शब्द हैं—एक है प्रेय, दूसरा श्रेय। एक चीज प्रिय हो सकती है, पर वो श्रेय हो, जरूरी नहीं है। कोई हितकर है, वो प्रिय हो जरूरी नहीं है। कोई प्रिय और हितकर दोनों हो सकती है। कोई अप्रिय होती है, न हितकर है। शास्त्रकार ने कहा है, जो हितकर-अच्छी चीज है, उसका आचरण करो।

कानों से सुनकर जो हितकर है, उसे आचरण में लाएँ। जो हितकर नहीं है उसे छोड़ें। तीन शब्द हैं—ज्ञान, हान, उपादान। जान लेना ज्ञान है। हान बुरे को छोड़ देना और उपादान अच्छे को ग्रहण कर लेना।

संतो-गुरुओं की वाणी को सुनना जो अच्छी बातें बताते हैं। सुनना भी अच्छा है, जीवन में उसे कितना उतारेंगे वो अलग बात है। एक कदम तो आगे बढ़ गया। कदम उठेंगे तो दूरी कम होगी। थोड़ा लाभ तो अच्छी बात सुनने से हो गया। सुनने से आज नहीं तो कल मन में आ जाए कि ये बात मुझे जीवन में उतारनी चाहिए। श्रवण के बाद मनन करें।

सुन लो, मनन कर लो फिर जीवन में उतार लो तो बहुत ही अच्छी बात हो जाए। शास्त्रकार ने सुनने की बात बताई कि सुनने से ज्ञान होता है, हम ज्ञान होने के बाद जो श्रेय है, उसका हमें आचरण करना चाहिए। श्रावक बारह व्रतों में एक है—इच्छा परिमाण। दूसरा भोग उपभोग परिमाण। इच्छाओं का परिसीमन करो, परिग्रह का परिमाण करो। भोगोपभोग का जीवन की शैली में पदार्थों का संयम करो। सुनकर उनको जाना, फिर जीवन में उतार लिया। कदम-कदम आगे बढ़ सकते हैं।

सैकड़ों योजन एक चींटी जा सकती है। गति है, तो मंजिल भी मिलेगी। तीव्र गति वाला गरुड अगर न चले तो कहीं नहीं पहुँच सकता। उज्जैन में शिक्षात्मक वाक्य था—धीरे-धीरे चलोगे तो महाकाल पहुँच जाओगे, तेज चलोगे तो हरिद्वार पहुँच जाओगे। गति के साथ सुरक्षा भी हो। जागरूक रहो, बहुत तेज मत चलो। गति धीमी भले हो, पर गति में अवरोध न हो। सम्यक् पुरुषार्थ करें तो कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

आत्मकल्याण के लिए समय का सम्यक् नियोजन करें : आचार्यश्री महाश्रमण

अंकित ग्राम, २६ मई, २०२१

तेजस्वी, ओजस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः विहार करके अंकित ग्राम के सेवाधाम आश्रम में पधारे। सेवा के योगी परम पावन ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि छः द्रव्य बतलाए गए हैं—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल, पुद्गलास्तिकाय और जीवास्तिकाय।

इनमें एक द्रव्य है—काल यानी समय। किसी भी कार्य को करने के लिए काल अपेक्षित होता है। जो समय जिस कार्य का हो, उस समय पर वह कार्य करना चाहिए। समय एक ऐसा तत्त्व है, जो निःशुल्क मिलता है। प्रतिदिन में २४ घंटे हर आदमी को मिलते हैं। कई बार मुफ्त में मिलने वाली चीज का अवमूल्यन भी हो सकता है।

बादल बरसता है, उसका बरसा हुआ पानी गंदी नाली में भी जा सकता है और उसका बरसा पानी कुंड में जा सकता है, कोई बरसा पानी शांटी में ले सकता है। पानी तो व्यापक रूप में बरसा है, उस पानी का उपयोग कैसा होता है, वह अलग बात है।

शास्त्रकार ने कहा है कि जो-जो रात्रि बीत रही है, बीतती है, उसमें आदमी धर्म करता है तो रात्रि सफल हो जाती है। उसमें जो अधर्म करता है, उसकी रात्रि असफल हो जाती है। जो आदमी समय का बढ़िया उपयोग करता है, वह दुनिया का बढ़िया आदमी है। जो आदमी समय का घटिया उपयोग करता है, वह दुनिया का घटिया आदमी है।

समय का हम कैसा उपयोग करते हैं, यह एक धातव्य विषय है। आर्ष सूत्र है—पंडित क्षण को पहचानो, समय-मात्र भी प्रमाद मत करो, जागरूक रहो, समय का अच्छा उपयोग करो।

समय धन है। जैसे कंजूस आदमी पैसे को सोच-सोचकर खर्च करता है, वैसे ही हमें समय का सोच-सोचकर अच्छे कार्य में उसका व्यय-नियोजन करना चाहिए। समय को बेकार मत जाने दो।

शरीर और आत्मा दो घटक तत्त्व हैं, इन दोनों से जीवन बनता है। आत्मा पर ध्यान दें कि मेरी आत्मा निर्मल बने। आत्मा के लिए साधना करें। यह एक प्रसंग से समझाया कि व्यस्त होना एक बात है, अस्त-व्यस्त होना अलग बात है। हमारा दिमाग अस्त-व्यस्त न हो, यह ध्यान रखें।

(शेष पृष्ठ ४ पर)



अक्षय तृतीया के विविध आयोजन

अक्षय तृतीया सुपात्र दान की अमर गाथा है

हैदराबाद, डी०वी० कॉलोनी

साध्वी शासनश्री जिनरेखा जी, साध्वी निर्वाणश्री जी, साध्वी काव्यलता जी आदि साध्वीवृंद के सान्निध्य में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम उल्लासपूर्ण माहौल में परिपूर्ण हुआ। तेरापंच भवन में समाजोचित इस वर्षीयतप पारणा महोत्सव के अवसर पर साध्वीश्री जी के सान्निध्य में पात्र-दान का लाभ लिया।

महेंद्र लुणावत, प्रवीण लुणावत, कपूर धारीवाल तथा प्रीति गांधी ने वर्षीयतप की आराधना की। इसके अतिरिक्त मंजु भंसाली, रेणु देवी सेठिया, बृजलता लुणिया ने इस अवसर पर अपना वर्षीयतप पूर्ण किया।

अक्षय तृतीया के अवसर पर साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि योगलिक युग का अंत और कर्मनिष्ठ मनुष्य युग के प्रारंभ का समय था जब भगवान ऋषभ इस युग में जनमे। उन्होंने अंसि, मसि व कृषि कर्म का प्रवर्तन कर धर्म का भी प्रवर्तन किया।

साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि भगवान ऋषभ ने चौविहार (निर्जल) तप के क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया। प्रतिवर्ष हजारों भाई-बहन एकांतर उपवास के साथ वर्षीयतप की आराधना करते हैं।

साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि भगवान ऋषभ ने श्रम की प्रतिष्ठा की। उन्होंने श्रम से सफल होने का सूत्र दिया। साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि अंतिम कुलकर नाभिराजा व माता मरुदेवा के कुल के भूषण थे भगवान ऋषभ। भगवान ऋषभ चौदह महास्वप्नों के साथ संसार में आए। वे प्रथम राजा, प्रथम तीर्थंकर, प्रथम यति थे। उन्होंने संसार की समस्त कलाएँ सिखाकर, धर्म की कला सिखाई।

साध्वीवृंद ने समवेत स्वर में गीत का संगान किया। तेषुप से प्रकाश बोधरा, तेरापंची सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराणा व तेममें से प्रेम देवी पारख ने

तपस्वी भाई-बहनों को शुभकामनाएँ दी। तपस्वी भाई-बहनों में मुनि वर्धमान जी के पिता ने प्रथम तो पुत्र मुनि का दूसरा वर्षीयतप पूर्ण हुआ।

इस अवसर पर तपस्वियों को अभिनंदन पत्र, माला आदि से तेरापंच सभा की ओर से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने किया।

राजाजीनगर

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि वैशाख शुक्ल तृतीया का मंगल प्रभात भारत की कई आध्यात्मिक संस्कृति से जुड़ा हुआ है। जैन परंपरा के अनुसार प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की साधिक १२ मास के तप से जुड़ा हुआ है। दीक्षा ग्रहण करने के बाद आज के दिन ऋषभ प्रभु के तप का पारणा हुआ। तपस्या सुरभित फूलों का गुलदस्ता है, जिससे स्वयं की आत्मा तो सुवासित होती ही है परंतु परिपार्श्व में रहने वाले को भी अध्यात्म के सम्मुख ले जाती है। बशर्त तपस्वी की कषाय विजय की साधना प्रभावी हो। जीवन व्यवहार में शांति, समता तथा सहिष्णुता वर्धमान रहे।

हमारे सामने उपस्थित हैं कांतादेवी धारीवाल, जिनके वर्षीयतप साधना के २२ वर्ष संपन्न हो गए आज उन्होंने २३वें वर्षीयतप का प्रत्याख्यान किया। चंपादेवी देरासरिया १२ वर्षीयतप संपन्न कर चुकी हैं। इसी प्रकार मीना सेठिया तथा वर्षा जैन ने एक-एक वर्षीयतप संपन्न किया।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि हम साध्वीवृंद सबसे पहले अक्षय तृतीया के मंगलप्रभात में संपूर्ण प्राणी जगत को अध्यात्मपूर्ण आशीर्वाद देते हुए कहना चाहते हैं कि भगवान ऋषभ की तप ऊर्जा से हर व्यक्ति का मनोबल, संयमबल तथा तपोबल बढ़ता रहे। साध्वी मंजुरेखा जी, साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी तथा साध्वी चेलनाश्री जी ने ऋषभ

स्तुति में एक सुमधुर गीत का संगान किया।

नोखा

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ के पारणे का शुभ दिन अक्षय तृतीया तब से प्रारंभ है, वर्षीयतप करने वाले दुबले-पतले हो लेकिन टुट-संकल्प आस्था और वैराग्य भावना से वर्षीयतप किया जा सकता है। यह उद्गार शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने साध्वी उदितप्रभा जी के वर्षीयतप अभिनंदन समारोह, साध्वी मर्यादाप्रभा जी के एकांतर तप के तीन वर्ष संपन्नता पर विशेष आशीर्वाद पर कहे।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी का मंगल संदेश इंदौर से प्राप्त साध्वी मनीषाश्री जी ने वर्षीयतप पर आशीर्वाद संवाद पढ़कर सुनाया। साध्वी ज्ञानप्रभा जी, साध्वी कीर्तिश्री जी, साध्वी समताश्री जी, साध्वी मुकुलप्रभा जी, साध्वी कुसुमप्रभा जी, साध्वी पुलकितप्रभा जी, साध्वी मनीषाश्री जी, साध्वी संवेगश्री जी, साध्वी प्रभातप्रभा जी आदि साध्वियों ने संयम, साधना, सहिष्णुता के साथ तपस्या करना विशेष साधना बताया एवं साध्वी उदितप्रभा जी को बधाई दी।

तप क्यों, तप कैसे, क्या मिलता है आदि जिज्ञासा के साथ संवाददाता के रूप में संवाद साध्वीवृंद ने रोचकता से प्रस्तुत कर भावविभोर कर दिया। तेरापंच सभाध्यक्ष हनुमानमल ललवानी, मंत्री इंद्रचंद बैद, उपासक अनुराग बैद, सुनील बैद, गोपाल लुणावत, लाभचंद छाजेड़, महिला मंडल अध्यक्ष कुसुम देवी छाजेड़, मंत्री मंजु बैद व साध्वीश्री की मातृश्री लीलादेवी सालेवा, जोरावरपुरा महिला मंडल व नोखा महिला मंडल ने तप अभिनंदन, वर्धपना भावांजलियाँ प्रस्तुति की।

शासनश्री साध्वी सुप्रभा जी ने तपस्वी साध्वी अण्णाजी जी, भूरांजी पन्नाजी महासती को याद करते हुए साध्वी उदितप्रभा जी ने किया। अक्षय तृतीया के अवसर पर गीतों की बहार रही।

महिला मंडल के कार्यक्रम

अन्नपूर्णा भोजन आपके द्वार

अहमदाबाद।

टिफिन व्यवस्था का सघन कार्य अहमदाबाद के हर क्षेत्र में अलग-अलग रूप में किया जा रहा है। यह कार्य सामुहिक रूप में दो स्थानों पर विशेष रूप से किया जा रहा है—तेरापंच भवन, शाहीबाग, सेवा के इस महान उपक्रम की संयोजिका सहमंजी संगीता बाटिया हैं एवं पश्चिम क्षेत्र अहमदाबाद में जिसकी संयोजिका भारती हैं।

अहमदाबाद के प्रत्येक क्षेत्र की बहनें अन्नपूर्णा बन सामाजिक रिश्तों को मजबूत करती हुई व्यक्तिगत रूप से भी टिफिन सेवा का अनुपम कार्य कर रही हैं। इसी क्रम में विश्वविख्यात सिविल हॉस्पिटल में दर्दियों को गरम-गरम खिचड़ी पहुँचाने के कार्य में बबीता भंसाली का विशेष सहयोग रहा। एक माह से प्रवर्धमान इस सेवा में अहमदाबाद के हर क्षेत्र से प्रतिदिन लगभग ३०० टिफिन पहुँचाए जा रहे हैं। संस्था अब तक ६००० से भी अधिक टिफिन पहुँचाने में कामयाब हुई है। अध्यक्ष मनिता चोपड़ा ने कहा कि कोरोना जैसी महामारी ने अन्नपूर्णा बन इस कार्य को सफल बनाने में संयोजिकाओं के साथ बहनें की सेवा को प्रणाम करती हैं व उन्हें अनंत-अनंत साधुवाद ज्ञापित करती हैं। मंत्री प्रतीक्षा सुतरिया ने सभी का आत्मीय आभार व्यक्त किया। तेरापंची सभा के साथ सामुहिक गोचरी सेवा का क्रम भी निरंतर चल रहा है। तीनों समय बहनें गोचरी सेवा का लाभ लेकर आनंद की अनुभूति कर रही हैं।

जप की बहार

अहमदाबाद।

आभामेमम के निर्देशानुसार तेममें के तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी, शासनश्री साध्वी रतनश्री जी, शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी की प्रेरणा से आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मदिवस, पदाभिषेक दिवस व दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय जप अनुष्ठान को महाअनुष्ठान बनाकर बच्चों, बुजुर्गों, युवकों, कन्याओं व महिलाओं के साथ सपरिवार ने मिलकर उल्लास, उमंग व उत्साह के साथ पूज्य गुरुदेव को आध्यात्मिक भावांजलि अर्पित की।

अध्यक्ष मनिता चोपड़ा के नेतृत्व में जप अनुष्ठान कार्यक्रम चला। आचार्य महाश्रमण जन्म दिवस को नमस्कार महामंत्र जप अनुष्ठान में सभी क्षेत्र से कुल १३०० संभागियों ने मिलकर लगभग १५०७ घंटे का जप किया। आचार्य महाश्रमण पदाभिषेक दिवस पर लोगसस का जप जिसमें ६०० संभागियों ने कुल १५०६ घंटे जप अनुष्ठान सामायिक के साथ किया। आचार्य महाश्रमण दीक्षा दिवस को ॐ शांति का जप जिसमें १३०० संभागियों ने १५२१ घंटे का जप कर पूज्य गुरुदेव श्री जी को भावांजलि अर्पित की।

जप संयोजिका परामर्शक पिस्ता देवी छाजेड़, रजनी बाई दुगड़, विनोद बालाजी डाग, भारती चंडालिया व सरिता लोडा का सराहनीय सहयोग रहा। मंत्री प्रतीक्षा सुतरिया ने सभी जप संभागी व संयोजिकाओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

आत्मकल्याण के लिए समय का...

(पृष्ठ ३ का शेष)

समय को सिस्टेमेटिक ढंग से व्यवस्थित रखा जाए। दिनचर्या अच्छी हो। आदमी का उठने का और सोने का समय पहले तय हो जाए तो समय की व्यवस्था हो जाती है। समय-सारिणी अच्छी हो, समय की नियमितता हो। दुकान समय पर खोल दी तो ग्राहक आने शुरू हो जाएंगे।

वक्ता के लिए आवश्यक है कि जो समय दिया गया है उसका अतिक्रमण न हो। भाषण के दो आयाम हैं—भाषण की लंबाई कितनी और भाषण की गहराई कितनी? गहराई की पूर्ति लंबाई से नहीं हो सकती। भाषण में गहराई महत्त्वपूर्ण बात हो सकती है। समय की नियमितता रहती है, तो जीवन का एक अच्छा संस्कार, अच्छी आदत हो जाती है। गृहस्थ ध्यान दें कि मैं धर्मााराधना के लिए, आत्मा के लिए कितना समय लगाता हूँ। शनिवार की ७ से ८ सायं की सामायिक करने का विशेष ध्यान रखें। स्वाध्याय के लिए समय का नियोजन करें। बच्चों को सुसंस्कार देने के लिए समय निकालें। बच्चे अच्छे संस्कारी होंगे तो भविष्य अच्छा होगा। हम समय का अच्छा उपयोग करें।

आज यहाँ सेवाधाम आश्रम में आए हैं। सेवा के नाम से जुड़ा ये आश्रम। खूब आध्यात्मिक-धार्मिक संस्कार यहाँ चलते रहें, पलते रहें। यहाँ के रहने वाले लोगों में अहिंसा, करुणा, संयम ये संस्कार अच्छे रहें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में सेवा धाम आश्रम के संस्थापक सुधीर गोयल ने गद्गद भावों से अपनी अभिव्यक्ति एवं आश्रम की गतिविधियों की जानकारी दी।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि वेदप्रतापजी वैदिक जो यहाँ से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा पहले मिलना हुआ था। उनके विचारों से जनता को अच्छी सुराक मिलती रहे। जनता को एक पथदर्शन भी देते रहें। अच्छा काम करते रहें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि मनन कुमार जी ने किया।



अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

* अखिल भारतीय तेरापंच युवक परिषद मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
* श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
* श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोधरा, लाडनू-इस्लामपुर	(₹11,00,000)
* श्री अशोक श्रेयांश बरसेका, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
* श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अहम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
* श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
* श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
* श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरडिया (अमराईवाड़ी ओडव)	(₹5,00,000)



आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६०वें जन्मोत्सव के कार्यक्रम उदितोदित प्रतिभा के पुरोधे - आचार्यश्री महाश्रमण

मंड्या

तेरापंथ भवन में आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्ठि वर्ष प्रवेश के अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए साध्वी डॉ० मंगलप्रजा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ आचार्यों की यशस्वी परंपरा पाकर गौरव की अनुभूति करता है। सरदारशहर की पवित्र धरा पर झूमरकुल में जन्म लेने वाला बालक अपनी मेधा से जन-जन का भाग्य-विधाता बन गया। माँ नेमादेवी के संस्कारों से संतों की सन्निधि मिली, प्रेरणा और पुरुषार्थ का मणिकांवन योग मिला और मुनि मुदित के रूप में आचार्यश्री तुलसी के शिष्य बन गए। समर्पण, विनय, अनुशासन, आज्ञा आदि विशिष्ट गुणों एवं योग्यताओं के कारण सदैव गुरुदृष्टि का प्रसाद मिलता रहा। मोहन से आचार्य महाश्रमण तक की कहानी बोध प्रदायक है। संपूर्ण मानव जाति आपकी कल्याणी वाणी से सही दिशा प्राप्त कर रही है। जीवन परिवर्तन का पैगाम पा रही है।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीवृंद के मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ सभाध्यक्ष खजुरीमल रायसोनी, तेयुप अध्यक्ष नितिन भंसाली, महिला मंडल अध्यक्ष नमिता भंसाली एवं श्रावक चंदनमल बोहरा ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की। महिला मंडल ने श्रद्धामय संगीत प्रस्तुत किया।

साध्वी मंगलप्रजा जी द्वारा रचित गीत का संगान साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी और साध्वी शौर्यप्रभा जी ने किया। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाश्रमण जी की करुणा अनुपम है, वे हर व्यक्ति को शक्ति और शांति का प्रकाश बाँट रहे हैं।

साध्वी सिद्धियशा जी ने संयोजक्रीय वक्तव्य में कहा कि आचार्य महाश्रमण भैक्षवगण के ऐसे पहरेदार हैं जो अपनी सबकी सुरक्षा के लिए प्रयासरत हैं।

संपूर्ण मंड्या तेरापंथ समाज ने अपनी भावपूर्ण श्रद्धा व्यक्त करते हुए अपने आराध्य के प्रति शुभकामना व्यक्त की। सामूहिक जप अनुष्ठान किया गया।

हैदराबाद

साध्वी जिनरेखा जी एवं साध्वी निवांशी जी के सान्निध्य में 9वें आचार्यप्रवर का जन्मदिन उल्लासपूर्वक मनाया गया। आचार्यश्री महाश्रमण जी के ६०वें जन्म दिवस पर शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि स्थानांग सूत्र में व्यक्ति की मापक अनेक चरुभिगिाँ विवेचित है। आगमकार कहते हैं कि कुछ व्यक्ति रूप संपन्न होते हैं, पर गुण संपन्न नहीं होते। आचार्यश्री महाश्रमण जी अंतः व

बाह्य दोनों सौंदर्य से संपन्न हैं तो गुणों के सागर हैं।

साध्वी निर्माणश्री जी ने कहा कि आकाश असीम है, उसके आँगन में सूरज, चाँद, सितारे, ग्रह आदि चमकते हैं तथापि धरती की महत्ता अधिक है, क्योंकि धरती के आँचल में महापुरुष जनमते हैं, पलते हैं। साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने अपनी कविता की प्रस्तुति के साथ कहा कि आज धरती खुशहाल है, गगन में भी नई पुलकन है। गुरुदेव के जन्मदिवस पर चारों ओर नई स्पंदन है। आचार्यश्री महाश्रमण जी इस युग के विलक्षण यायावर हैं।

इस अवसर पर साध्वी मधुरयशा जी, साध्वी श्वेतप्रभा जी, साध्वी धवलप्रभा जी, साध्वी लावण्यप्रभा जी, साध्वी कुंदनयशा जी, साध्वी मुदितप्रभा जी, साध्वी मार्दवयशा जी, साध्वी मधुरप्रभा जी ने गीत की मधुर व भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत महाश्रमण अष्टक की प्रस्तुति से हुई। साध्वी श्वेतप्रभा जी, साध्वी लावण्यप्रभा जी, साध्वी मार्दवयशा जी ने स्वर दिया।

चांदोतारा (उड़ीसा)

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा कुसुंड चांदोतारा के तत्वावधान में सेवाभावी संजीव कुमार के निवास स्थान पर आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६०वाँ

जन्म दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि आचार्य महाश्रमण जैन शासन के ज्योति तीर्थ पुरुष हैं, वह श्रमण संघ संस्कृति के अनमोल रत्न हैं। आचार्य महाश्रमण जी का जीवन विविधताओं का संगम है, वह बहुआयामी व्यक्तित्व वाले हैं, वे कवि, लेखक, गीतकार, साहित्यकार, प्रवचनकार, संगीतकार हैं, वह आत्म तीर्थ वैरागी साधक हैं। जन्म दिवस पर यही कामना करते हैं कि आप दीर्घायु हों और जिन शासन की प्रभावना करते रहें, मुनि परमानंद जी ने कहा कि आचार्य महाश्रमण जी महान व्यक्तित्व के धनी हैं, वे अपनी अर्हता से जन-जन के अभिवंदनीय बन गए हैं। मुनि कुणाल कुमार जी ने मधुर संगान किया।

इस अवसर पर उड़ीसा प्रांतीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मुकेश जैन, तेरापंथ सभा सिंधिकेला के अध्यक्ष माणकचंद जैन, तेरापंथ सभा कुसुंड चांदोतारा के अध्यक्ष जयभगवान जैन, तेयुप के अध्यक्ष मनोज जैन, राजेश जैन, विकास जैन, सुमित जैन, संजीव जैन, इशिका, दिशा, लब्धि, खुशबू जैन आदि ने अपने आराध्य के प्रति अभ्यर्चना की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। इस अवसर पर प्रांतीय सभा के कोषाध्यक्ष सुदर्शन आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मंगल विहार

बायतु।

स्थानीय तेरापंथ भवन में मुनि स्वास्तिक कुमार जी एवं मुनि सुपाश्वर्य कुमार जी ने फलसुंड की ओर मंगल विहार किया। मुनिश्री ने एक माह के प्रवास को सातकाराती बताते हुए कहा कि कोरोना जैसी महामारी के दौर में लोक डाउन होने के बावजूद भी कहीं ऐसा नहीं लगा कि कुछ असुविधाजनक हो। इस अवसर पर मुनि स्वास्तिक कुमार जी ने कहा कि पुण्यवनों की कृपा प्राप्त बायतु वासियों की श्रद्धा भावना बहुत अच्छी है। जागरूकता भी अच्छी है। आगामी मर्यादा महोत्सव ऐतिहासिक बने इसके लिए संपूर्ण श्रद्धावाह से संगठित रूप से इस प्रकार कार्य करें कि बायतु मर्यादा महोत्सव इतिहास में अप्रतिम मर्यादा महोत्सव के रूप में अंकित हो।

इस अवसर पर मुनिश्री ने एक माह के बायतु प्रवास पर मंगल गीत की रचना की, जो अत्यंत ही मनभावक लगी। मुनि सुपाश्वर्य कुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि बायतु में चातुर्मास नहीं है, लेकिन बाइमेर भी दूर नहीं अनुकूलता रहे ऐसे भवन खुला रहे, तप-जप साधना सतत रूप में चलती रहे। आपश्री ने भी युवाशक्ति को संदेश में कहा कि मर्यादा महोत्सव अनुठा बने ऐसी पहल युवाओं को अपनी सक्रिय भूमिका के माध्यम से अभी से करनी चाहिए। जप-ध्यान, आत्मसाधना की दृष्टि से महावीर जयंती और अखातीज का प्रवास मंगलकारी रहा। तेरापंथी सभा अध्यक्ष जैतमल छाजेड़ ने मुनिश्री के प्रवास एवं विहार विस्तृत जानकारी दी।

निःशुल्क ऑक्सीजन सेवा प्रारंभ

उधना।

तेयुप द्वारा कोरोना महामारी को ध्यान में रखते हुए तेरापंथ भवन में ऑक्सीजन सिलेंडर की व्यवस्था निःशुल्क प्रारंभ की गई। जिसमें संपूर्ण तेरापंथ समाज का सहयोग रहा। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारस बाफना, मंत्री जरीमल दुगड़, तेयुप अध्यक्ष अरुण चंडालिया, मंत्री मनीष दक, तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष संजय बोथरा, अर्पित नाहर आदि अनेक सदस्यगण उपस्थित रहे।



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

दिल्ली।

उगमचंद जंवरि देवी कोटेचा का प्रपौत्र कमल सुनीता कोटेचा का पौत्र (सुपुत्र लोकेश जागृति कोटेचा) लाडनू निवासी, दिल्ली प्रवासी का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से लक्ष्मीपत गोडिया (नानाजी) के निवास स्थान पर उपासक व संस्कारक विमल गुनेचा व संस्कारक कमल सेटिया ने संपूर्ण विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न कराया गया।

उपासक व संस्कारक विमल गुनेचा ने उपस्थित सभी पारिवारिकजनों व गणमान्य व्यक्तियों का तेयुप, दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापित किया तथा पारिवारिकजनों को त्याग-प्रत्याख्यान करवाए। तेयुप द्वारा कोटेचा परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

पूर्वांचल-कोलकाता।

कांकुरगाछी-पूर्वांचल निवासी छतर सिंह पारख के पुत्र व पुत्रवधू आशीष-दीपिका पारख के आँगन में लक्ष्मीस्वरूपा कन्या का शुभ आगमन हुआ। कन्या का नामकरण संस्कार अभातेयुप संस्कारक विजय कुमार बरमेचा एवं पुष्पराज सुराणा ने तीर्थकर स्तुति व मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा संपूर्ण विधि-विधान द्वारा करवाया। छतर सिंह पारख ने दोनों संस्कारकों व परिषद के प्रति आभार व्यक्त किया।

साउथ हावड़ा।

साउथ हावड़ा प्रवासी श्रेयांस-वर्षा जैन की पुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से तेयुप द्वारा संपन्न हुआ। अभातेयुप संस्कारक संजय पारख ने पारिवारिकजनों की उपस्थिति में मंगल मंत्रोच्चार कर सविधि संस्कार संपादित कराया। संस्कारक ने पारिवारिकजनों को आध्यात्मिक संकल्प कराए।

अध्यक्ष पवन बैंगानी ने परिषद पवार की ओर से शुभकामनाएँ दीं एवं घोड़वत परिवार को जैन संस्कार विधि अपनाने के लिए साधुवाद दिया। कन्या की भुआ वंदना बरड़िया ने परिवारजनों की तरफ से परिषद का आभार प्रकट किया।

नूतन गृह प्रवेश

वापी।

लाडनू निवासी, वापी प्रवासी नरपतलाल मदनलाल कोठारी के नूतन गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से परिसंपन्न हुआ। अभातेयुप सदस्य जैन संस्कार विधि राज्य प्रभारी डॉ० श्रेणी संस्कारक संजय भंडारी एवं सहयोगी जैन संस्कारक एवं वापी तेयुप अध्यक्ष कुलदीप कोठारी, सहयोगी संस्कारक विवेक बोथरा एवं श्रेयांस कच्छरा द्वारा जैन संस्कार विधि से संपादित कराया गया।

वापी सभा के पूर्व मंत्री राकेश बोथरा की गरिमामयी उपस्थिति रही। परिवारजनों ने संस्कारकों का आभार व्यक्त किया। तेयुप की ओर से पारिवारिकजनों को मंगलभावना यंत्र भेंट किया। संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किए।

विवाह संस्कार

जयपुर।

प्रदीप कोचर के सुपुत्र गर्वित कोचर का विवाह संस्कार राजेश बरड़िया की सुपुत्री कृतिका बरड़िया के साथ संपन्न कराया गया।

तेयुप, जयपुर द्वारा वर-वधू एवं दोनों पक्षों से लिखित में पंजीकृत प्रमाण-पत्र पर उनकी सहमति ली गई तदुपरांत डॉ० संस्कारक सुनील जैन ने विवाह की रश्मों का विधिपूर्वक निर्वहन करते हुए जैन संस्कार विधि से विवाह संस्कार संपन्न करवाया।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष श्रेयांस बैंगानी, जैन संस्कार विधि संयोजक सुनील जैन ने मंगल भावना पत्रक भेंट किया।



शासनश्री साध्वी जयप्रभा जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

अर्हम्

● शासनश्री साध्वी सुव्रतांश्री ●

जय-जय जय-जय जयप्रभा की कुल पर कलश चढ़ायो।
अनशन पथ अपनायो।।

श्री तुलसी स्यू लेकर दीक्षा कियो ज्ञान रो अर्जन।
विजयश्री जी की सन्निधि में संस्कारों रो सर्जन।
सेवाभाव अनूठो थारो सबरे दिल में भायो।।

रतनश्री जी सती सुव्रतां थारी ज्येष्ठा भगिनी।
मातृसुता है सुमनप्रभाजी कुलबाला लघु भगिनी।
चोरड़िया कुल ने उजवालयो जीवन धन्य बनायो।।

घोर वेदना तन में थारे मन में भारी समता।
देख-देख आवे है इजरज मक्खन सी कोमलता।
जाप और स्वाध्यायलीन बन कर्मा रो कर्ज चुकायो।।

महानिर्जरा लक्ष्य बनायो मुक्ति स्यू लय लागी।
तोड़यो बंधन स्नेह राग रो अंतर्प्रज्ञा जागी।
क्षण-क्षण में थे बप्या जागरूक जीवन दीप जलायो।।

आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है सही समझ में आयो।
शुभ भावों में शुभ लेश्या में संथारो पचखायो।
भरी छलौंग एकदम ऊँची शासन शिखर चढ़ायो।।

लय : संयममय जीवन---

अर्हम्

● साध्वी योगक्षेमप्रभा ●

अनशन है जयकारी।
शासनश्री जयप्रभाजी की हम जाएँ बलि-बहलहारी।।

विपुल वेदन तन में फिर यह कैसे हिम्मतधारी?
नेह देह का तजकर जोड़ी आत्मा से इकतारी।
समता देख अनूठी सतिवर! विस्मित है नरनारी---अनशन।।

चिन्मय से जब प्रीत जगे तब होता है संथारा।
मृणाय से जब मोह छूटे तब बदले चिंतनधारा।
भावों की श्रेणी आरोहण है सुकृत संचारी---अनशन।।

सुखपृच्छ सह करें वंदना, अविनय आप खमाए।
पद निर्वाण प्राप्त हो जल्दी यही भावना भाए।
मिला भाग्य से भैक्षव शासन, जिन शासन सुखकारी---अनशन।।

क्षणभंगुर इस तन से आखिर, पूरा सार निकाला।
साथ मिला सुंदर सतियों का, मृत्यु को ललकारा।
विजय वरो इस कर्म समर में मंजिल पा मनहारी---अनशन।।

लय : संयममय जीवन हो---

अर्हम्

● 'शासनश्री' साध्वी धनश्री आदि साध्वियाँ ●

कैसी शक्ति जगाई रे, अनशन थे धार्यो।
वीर वृत्ति दिखलाई रे, अनशन थे धार्यो।
दिल्ली प्रवास री साई रे, अनशन थे धार्यो।।औ।।

पथ संयम रो अपनायो, जीवन ने धन्य बनायो।
अंतर री ज्योति जगाई रे, अनशन थे धार्यो।।

चारों बहनों में छोटा, काम दिखलाया मोटा।
जयप्रभा विजय वरदाई रे, अनशन थे----।।

गुरु आज्ञा पर गहराई दृष्टि, पाई गुरु कृपा शुभ वृष्टि।
शासन शोभा बढ़ाई रे, अनशन----।।

कलाओं में दक्ष कहाता, चतुराई खूब रखाता।
व्यवहार कुशलता सुहाई रे, अनशन थे----।।

भगिनी भतीजी योग मिल्यो है, कैसे सुंदर भाग्य खिल्यो।
दस सतियाँ सेवा सुखदाई रे, अनशन----।।

भावों की श्रेणी चढ़ती, महाश्रमण सन्निधि बढ़ती।
भव जल पार लगाई रे, अनशन----।।

क्षमा याचना हम करते, शुभ भावों को अनुसरते।
मंजिल मुक्ति री कमाई रे, अनशन थे----।।

लय : कैसी वह कोमल---

अर्हम्

● साध्वी वसंतप्रभा, साध्वी संकल्पश्री साध्वी कल्पमाला, साध्वी रोहितयशा ●

मंगल अवसर आया, हृद हिम्मत कर दिखलाया।
शासनश्री जयप्रभाजी, अद्भुत सौरभ फैलाया।
अनशन कर दिखलाया है, ऊँचा लक्ष्य बनाया है।।

तुलसी गुरु के चरणों में, दीक्षा व्रत स्वीकारा।
साध्वी विजयश्री ने, संस्कारों से खूब संवारा।
अंतर शक्ति जगाएँ, जीवन धन्य बनाएँ।।

सेवा, समता और समर्पण, देखी गण-गणपति इकतारी।
सहनशीलता देख तुम्हारी, जाते सब बलिहारी।
क्या गुण गौरव हम गाएँ, भावों का थाल सजाएँ।।

गुरुवर की ऊर्जा शक्ति से, लक्षित मंजिल पाओ।
दृढ़ संकल्प, मनोबल से, आत्मोत्थान कर पाओ।
यही हम भावना भाएँ, उज्ज्वल जीवन बन जाएँ।।

साध्वी रतनश्री जी ने, साहस दीप जलाया।
तीसरा मनोरथ पूर्ण करो तुम, अनुपम आशीर्वर पाया।
साध्वी वसंतप्रभा गाएँ, अंतर भाव सुनाएँ।।

लय : सूरज कब दूर---

अर्हम्

● 'शासनश्री' मुनि विजय कुमार ●

साध्वीश्री जयप्रभाजी इतिहास बनायो थे।
अनशन कर संयम जीवन पर कलश चढ़ायो थे।।

भगिनी चतुष्क सह भतीजी री ख्यात बणी भारी।
डूंगरगढ़ चोरड़िया कुल रो मान बढ़ायो थे, अनशन।।११।।

है सहज सरल निश्छल दिल व्यवहार कुशल सतिवर।
विचरण भी कर्यो जठे ही अति आदर पायो थे, अनशन।।२।।

शासनश्री रे खिताब स्यू गण में शोभा पाई।
तन री ज्यू ममता त्यागी जीवन चमकायो थे, अनशन।।३।।

बढ़ता-चढ़ता भावों स्यू अपनी मंजिल पाओ।
संथारो स्वीकृत करके आदर्श दिखायो थे, अनशन।।४।।

लय : प्रभु पार्श्वदेव चरणों में शत-शत प्रणाम हो---

अर्हम्

● 'शासनश्री' साध्वी भाग्यवती व सहवर्तिनी साध्वियाँ ●

'धन्य' जयप्रभा साध्वीश्री बाजी जीती पाछली।
काढ्यो नरभव रो थे सार, कलगी आशा बेलड़ी।।

गिरिगढ़वासी चोरड़िया कुल में आभा प्रखरी।
भगिनी चतुष्क संघ चमन में सुषमा सांतरी।
तुलसी संयम रत्न दिलाकर, भाग्य रेखा बदली।
सग भतिजी रे भी मन में संयम ज्योति प्रजली।।
धन्य जयप्रभा शासनश्री---

सौम्य शांत समरस जीवन स्यू पाई प्रेरणा।
सहज-सरल व्यक्तित्व, जागरूक क्षण-क्षण चेतना।
अवसर आया हिम्मत राखे सवमुच कोई आत्मबली।।
धन्य जयप्रभा---

लघुवय में संयमश्री रो वरदान मिल्यो अवदात।
चिरकालिन पर्याय विशुद्धि रा खिलन्या जलजात।
'अमल धवल चारित्र चदरिया' राखी हरदम उजली।।
धन्य जयप्रभा---

काल अनन्तो बीत्यो, रही अब नदी गंग अवशेष।
जल्दी मुगती वरज्यो, जीतो परिणामां (शुभ भावां) रो रेस।
इकभवतारी बणकर करल्यो नेडी मोक्ष री कड़ी।।
धन्य जयप्रभा---

महातपस्वी महाश्रमण री वर अनुशासना।
सदा शिवंकर शुमकर पूरे सब री कामना।
गण री सेवा करस्यू बांधो मन में पक्की गांठडी।
उपर जाकर सेवा करस्यू राखो श्रद्धा आखडी।
धन्य जयप्रभा शासनश्री जीती बाजी पाछली।।

लय : धन्य गजसुकमाल मुनि---



शासनश्री साध्वी जयप्रभा जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

अर्हम्

● साध्वी हेमेरेखा, साध्वी प्रसन्नप्रभा, साध्वी ऋतुयशा ●

जय-जय हो जयप्रभाजी सतीवर की।
संधारे के हर उजले पल की--जय--
लघुवय में संयम स्वीकारा, श्री तुलसी करकमलों द्वारा।
बदली धारा निज जीवन की॥१॥
आज्ञा-आराधन में तत्पर, संघ सेवा में रहते सत्वर।
पाई शुभ दृष्टि तीन-तीन गुरुओं की॥२॥
निर्मल उज्वल आभामंडल, पुलकित रहता निज मुखमंडल।
रहती निर्मलता अंतर भावों की॥३॥
सेवाभावी सतियाँ सारी, दिल्ली नगरी साताकारी।
नीवें गहराई गणवन की॥४॥
शासनश्री जयप्रभाजी ने, कैसा अद्भुत संधारे का योग मिला।
मंगल महिमा गाते हम, प्रसन्न ऋतु इस अवसर की॥५॥
तेरापंथ धर्मसंघ में संधारा-संलेखना का अवसर विरले साधु-साध्वियों को मिलता है। आज शासनश्री साध्वी जयप्रभा जी महाराज ने बहुत हिम्मत व साहसिक चरणों को इस कोरोना काल में अपने जीवन को झकजोर दिया और आचार्यश्री महाश्रमण के शासनकाल में संधारा कर जीवन का, संयम का सार निकाला है। हम दूर बैठे तीनों सतियाँ आपकी मंगलकामना, भावना करते हैं कि हमें भी ऐसे संयम जीवन का अंतिम समय आप जैसे संधारा-संलेखना कर आत्मा को भावित करें। इन्हीं मंगलभावों के साथ अपने शब्दों को विराम देती हूँ।

लय : जय बोलो संघ सितारे की---

अनशन री महिमा छई

● साध्वी अणिमाश्री ●

शासनश्री जी! सतिवर थाने, सौ-सौ बार बधाई।
अनशन री महिमा छई।।
जबरो काम करयो थे सतिवर, बाजी यश-शहनाई।
ऐ, मंगल-घड़ियाँ आई।।
धन्य बण्यो चौरड़िया, परिकर, सुता पाँच बहराई।
दोन्नु बहनां जय-रतन ने गण में पहचान बणाई।
जयप्रभाजी सतिवर! थे तो हद हिम्मत दिखलाई।।
बड़भगिनी पचखायो अनशन, धन्य बण्यो है जीवन।
चढ़ते भावां संधारो ले पायो थे संजीवन।
घणो दीपतो ओ संधारो, अद्भुत ख्यात बणाई।।
गिरिगढ़ में सागे रहणै रो, म्हे भी मोको पायो।
याद करां थारी सहजता, मनडो म्हारो हुलसायो।
बाजी जीतो सतिवर! अब थे, जागी है पुण्याई।।
गुरुदृष्टि रो कर आराधन जीवन सफल बणायो।
नगरां-गावां विचर्या, गण रो गौरव खूब बढ़ायो।
छेलो पावस दिल्ली में कर, जस झंडी फहराई।।
शशि रेखा जी, शतीलयशा जी धुर स्युं थारे सागे।
रोहित-मंदार अरु कांतप्रभाजी, सेवा में हे आगे।
पांचू सतियाँ आगीवान री सेवा खूब बजाई।
‘साध्वी अणिमा’ पांचू सतियाँ री कलि-कलि विकसाई।।

लय : जहाँ डाल-डाल---

अर्हम्

● साध्वी डॉ० लावण्यशा ●

शासनश्री जयप्रभा जी शासन शान बढ़ाई।
संयम की उजली चादर को देते सौ सौ बधाई।
जय हे जय हे जयप्रभा, शासनश्री की बढ़े प्रभा।।
हुलासमल की लाल लाडली विद्या माँ मन भाई।
गिरिगढ़ में जन्मी तुम देखो गिरिगढ़ दीक्षा पाई।
गुरु तुलसी से संयम पाकर, जागी नव पुण्याई।।
विनय समर्पण श्रद्धा तुम में गुरु निष्ठा आज्ञाकारी।
बड़ भगिनी से संधारा पा हद हिम्मत हिकारी।
वीर वृत्ति से अनशन लेकर, चोरड़िया कुल चमकाई।।
सब जीवों से मैत्री रखती प्रमोद भाव गुणकारी।
पापभीरुता ऋजुता मुदुता जीवन में सुखकारी।
कला कौशल में कुशल बनी, और सेवाभाव मनहारी।।
भिक्षु शासन संघ सुनहला गुरुओं की कृपा है पाई।
महाश्रमण ने शासनश्री का अलंकरण दिया वरदाई।
सूरज लावण्य नैतिक सह, मंजु गीत गा हर्षाई।।

अर्हम्

● शासनश्री साध्वी सरोजकुमारी ●

सचमुच अनशन भारी जी, बहुत कठिन है काम।
आत्मा से जुड़ी इकतारी जी---
गुरु तुलसी संयमदाता, जन-जन के भाग्यविधाता।
गुरु शरण स्वीकारी जी।।
साध्वी विजय अग्रगामी, तन कपड़े ज्यूं अनुगामी।
सुखकारी सहचारी जी।।
लंबी-लंबी यात्राएँ, शासन की शान बढ़ाएँ।
मौनी मंगलकारी जी।।
बहिनों का योग मिला है, संयम जीवन उजला है।
गुरुवर के आभारी जी।।
माटी का मूल्य चुकाया, गण मंदिर कलश चढ़ाया।
हिम्मत पर बलिहारी जी।।
कर्मों पर चला हथोड़ा, नश्वर तन से मन मोड़ा।
किया काम सुविचारी जी।।
क्षण-क्षण बीते ये सुखकर, मंजिल पाओ अब सत्वर।
बीमारी भी यह हारी जी।।
सरोज करे शुभकामना, गुरुदृष्टि की आराधना।
भैशव गण जयकारी जी।।

लय : कैसी वह कोमल---

अर्हम्

● शासनश्री साध्वी यशोधरा ●

सूरज-चांद सितारे सुर-नर अनशन गौरव गाए।
श्रद्धानत शीश झुकाए।।
धन्य-धन्य शासनश्री जिन शासन की शान बढ़ाए।
हम श्रद्धा सुमन चढ़ाएँ।
हम श्रद्धा अर्घ्य चढ़ाएँ।।
चार-चार सुख शय्या में, पल-पल शयन किया है जीभर।
निर्मल गतिशील सदा उपयोगी, सतिवर जैसे निर्झर।
भगिनी चतुष्टय और भतीजी, चोरड़िया कुल चमकाए।।
त्यागी तन की ममता तुमने, मृत्यु को ललकारा।
अद्भुत शौर्य वीर्य से, वाह-वाह, पचखलिया संधारा।
रण रजपूती, मन मजबूती, गण की नींव गहराएँ।
शासन सुषमा महकाएँ।।
अतिश्रम से तपते-खपते-जपते नाव किनारे आई।
वर्धमान भावों की श्रेणी, बाजी यश शहनाई।
अद्भुत क्षमता, अद्भुत समता, सिद्धि सदन पहुँचाए।
महाश्रमण का मंगल साया करुणामृत बरसाए।
गुरुकरुणा से पंगुनर उतुंग शिखर चढ़ जाए।
अहो विहार में उद्यत ‘जय’ जय-विजय ध्वज।
अनशन में रत जयप्रभाजी जय-विजय ध्वज लहराए।
जय-विजय ध्वज लहराए।।

लय : जहाँ डाल-डाल---

उद्यान खिल्यो मन भायो

● शासनश्री साध्वी कमलप्रभा, साध्वी शुभप्रभा, साध्वी संपूर्णयशा ●

डाल-डाल और पात-पात पर रंग अनूठो छायो।
गुरु तुलसी स्युं दीक्षित शिक्षित विचर्या देश-प्रदेशा।
गुरु इंगित आज्ञा रो सतिवर, राख्यो ध्यान हमेशा।
स्वाध्याय जाप रा फूल खिलाकर जीवन ने महकायो।।
उद्यान---
जगी चेतना पौरुष जाग्यो, भवसागर स्युं तरणो।
हरपल हरक्षण शुभभावां रो रह्यै प्रवाहित झरणो।
ऊर्ध्वारोहण री यात्रा में, अद्भुत शौर्य दिखायो।।
उद्यान---
कर्मशत्रु स्युं लोहो लेवण, सामी छाती मंडय्या।
शूरवीरता रो ओ परिचय, आत्म समर में डटय्या।
माटी री काया पर पावन सोने रो कलश चढ़ायो।।
अंत समय तक भैक्षव गण में बण्या रह्या उपयोगी।
शशि कांत शीतल सेहित मंदार सभी सहयोगी।
महाश्रमण रे बरतारे में, जय-विजय ध्वज लहरायो।
महाश्रमणी रो मंगल सायो, अनुपम दीप जलायो।।
उद्यान---

लय : जहाँ डाल-डाल पर---



तेरुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन



आवश्यक सामग्री वितरण

जसोल।

तेरुप द्वारा आचार्यश्री महाप्रज्ञ मेडिकल योजना के अंतर्गत तेरुप द्वारा सेवा कार्य किया गया। पुराना ओसवाल समाज जसोल के प्रांगण में तेरापंथ सभा मंत्री माणकचंद संकलेचा, जेटीएन प्रभारी कांतिलाल डेलडिया, तेरुप अध्यक्ष तरुण भंसाली, मंत्री अमित मांडोत, उपाध्यक्ष अमित सुराणा, नरेश बोकडिया, सहमंत्री हितेश बोकडिया एवं हेमंत श्रीश्रीमाल की उपस्थिति में बैनर विमोचन कार्यक्रम किया गया।

तेरुप मंत्री अमित मांडोत ने बताया कि इस सेवा कार्य के अंतर्गत संपूर्ण जसोल जैन समाज के घर-घर जाकर तेरुप की टीम ने ३०० कोरोना किट की निःशुल्क दवाइयों का वितरण किया गया। तेरुप द्वारा स्व० मोहनलाल भंसाली की स्मृति में जय विजय ग्रुप परिवार जसोल का आर्थिक सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

सेवा कार्य

जसोल।

अभातेरुप के तत्वावधान में तेरुप, जसोल वर्तमान कोरोना महामारी जैसी विषम परिस्थितियों में महत्त्वपूर्ण सेवा कार्य की भूमिका निभा रहा है। तेरुप अध्यक्ष अरुण भंसाली ने बताया कि इस सेवा कार्य के अंतर्गत राजकीय नाहटा अस्पताल बालोतरा में दस Oxygen flow meter Rgulator with Bottle और जरूरतमंद मरीजों को पच्चीस Oxymeter दिए गए।

सेवा कार्य के अंतर्गत आचार्यश्री तुलसी राजकीय कोठारी अस्पताल जसोल में आवश्यकता के अनुसार Blood Pressure Instrument दिया गया। चिकित्सा प्रभारी डॉ० सोरभ शारदा द्वारा इस सेवा कार्य के लिए तेरुप, जसोल को साधुवाद दिया गया। इस कार्यक्रम में तेरुप अध्यक्ष तरुण भंसाली, मंत्री अमित मांडोत, उपाध्यक्ष अमित सुराणा, सहमंत्री हितेश बोकडिया, डॉ० सोरभ शारदा, डॉ० हितेंद्र सिंह एवं नर्सिंग स्टाफ उपस्थित रहे।

१०० किट मेडिसिन भेंट

रतलाम।

तेरुप द्वारा सेवा भारती, रतलाम को १०० किट मेडिसिन भेंट की गई। संस्था को जब ज्ञात हुआ कि सेवा भारती विभिन्न क्षेत्रों में कोरोना के दुष्प्रभाव कम करने हेतु आवश्यक मेडिसिन की किट का वितरण कर रही है तो तेरुप ने मेडिसिन भेंट करने का निर्णय लिया।

तेरुप अध्यक्ष हेमंत दक के निर्देशन में सहमंत्री अंकित निमजा, हर्षवर्धन मणूत, लव दक ने उपस्थित रहकर संपूर्ण सामग्री जिला प्रचारक वीरेंद्र गोटी, अध्यक्ष राकेश मोदी, कोषाध्यक्ष बी०आर० पाटीदार, अनुज छाजेड़ व नरेंद्र श्रेष्ठ को भेंट की। मंत्री पुनीत भंडारी ने सभी दानदाताओं का आभार व्यक्त किया व आगे भी ऐसे ही सहयोग की कामना की।

राशन सामग्री वितरण

राजाराजेश्वरी नगर।

तेरुप की ओर से राजाराजेश्वरी नगर स्थित सांत्वना ओल्डऐज होम को जरूरत की सामग्री पहुंचाई गई। यह सेवा कार्य सच्चिदाय माता भक्त परिवार के सहयोग से किया गया। सेवा कार्य के प्रभारी हितेश बोथरा ने सांत्वना ओल्डऐज होम से जानकारी जुटाई कि क्या-क्या सामग्री की आवश्यकता है तथा उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए राशन की सामग्री सांत्वना ओल्डऐज होम में भेजी गई।

समियाए धम्मे का आयोजन

विजयनगर।

तेरुप द्वारा अभातेरुप निर्देशित समियाए धम्मे का आयोजन संपूर्ण श्रावक-श्राविका समाज के लिए किया गया। इस अवसर पर अभातेरुप एवं तेरुप विजयनगर टीम के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना के निवास स्थान पर साध्वी प्रमिलाकुमारी जी के दर्शन एवं सामायिक की आराधना की।

सर्वप्रथम तेरुप अध्यक्ष पवन मांडोत ने स्वागत करते हुए परिषद कार्यक्रम की जानकारी दी कि समियाए धम्मे का आयोजन लगभग एक वर्ष से प्रतिदिन शाखा परिषदों के माध्यम से संपूर्ण देशभर में हो रहा है एवं आचार्य महाश्रमण जी के ६०वें जन्म दिवस को सामायिक के साथ मनाने के लिए संपूर्ण परिषद परिवार एवं श्रावकों का आभार किया।

इस अवसर पर अभातेरुप के निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया, अभातेरुप कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना, परिषद मंत्री देवांग बैद, मनीष चावत, राकेश पोखरना, अरविंद पोखरना आदि उपस्थित रहे।

साध्वीश्री जी ने इस अवसर पर अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया एवं परमपूज्य गुरुदेव के ६०वें जन्मदिवस के अवसर पर सामायिक करने के लिए तेरुप, विजयनगर के प्रति साधुवाद संप्रेषित की। उन्होंने धर्मसंघ के विशिष्ट साधु-साध्वियों के बारे में जानकारी प्रदान की।

टीका दिवस का आयोजन पनवेल।

अभातेरुप के तत्वावधान में तेरुप द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४८वें टीका दिवस के उपलक्ष्य में युवा दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। परिषद द्वारा आचार्यप्रवर का जन्मोत्सव हर्षोल्लास एवं आध्यात्मिकतापूर्वक मनाया गया। तेरुप अध्यक्ष दीपक सामोता ने बताया कि युवा शक्ति ने इस अवसर पर सैकड़ों त्याग और संकल्प के प्रत्याख्यान किए। युवा दिवस के उपलक्ष्य में त्याग और संकल्प के आह्वान के साथ ही संपूर्ण धर्मसंघ में अपने आराध्य को त्यागमय भेंट देने की होड़ लग गई, जिसमें एक त्याग से लेकर ४८ त्याग तक

के संकल्प लिए गए। परिषद के सदस्यों एवं संपूर्ण समाज ने ११३६ से अधिक संकल्प किए।

इस आयोजन को सफल बनाने में मंत्री जितेंद्र संचेती, कोषाध्यक्ष अंकित चौधरी, महिला मंडल संयोजिका, ज्योति बाफना सहित संपूर्ण समाज का विशेष सहयोग रहा।

धम्म जागरण कार्यक्रम

बारडोली।

अभातेरुप के निर्देशन में तेरुप द्वारा स्वामी जी की तेरस के उपलक्ष्य में पारसमल, पीयूष कुमार बाफना के निवास स्थान पर स्वामी जी की तेरस का कार्यक्रम किया गया।

कार्यक्रम में तेरुप, बारडोली के गायक संजय बड़ोला, तेरुप अध्यक्ष महावीर दक, मंत्री साहित बाफना, कार्यसमिति सदस्य पीयूष बाफना, सुशील सरणोत, अभातेरुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री जयेश मेहता, कार्यसमिति सदस्य रोनाक सरणोत आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम में स्वामी जी की गीतिका, स्वामी जी का जप, नवकार मंत्र जाप का आयोजन किया गया।

रक्तदान शिविर

सूरत।

अभातेरुप के निर्देशन में तेरुप द्वारा सार-संभाल के अंतर्गत स्वस्थ परिषद अभियान के अंतर्गत स्वेच्छिक रक्तदान हुआ। ५ रक्तदाताओं ने स्वेच्छिक रक्तदान की इच्छा व्यक्त की। उसी को लक्षित कर तेरुप, सूरत के ब्लड एवं प्लाज्मा प्रभारी सतीश संकलेचा ने रक्तदाताओं को सेवियर वोलेंटेरी ब्लड बैंक में ले जाकर ५ यूनिट रक्तदान कवाया। जिसमें रक्तदाता के रूप में महेश परीख, पंकज डागा, खुश डागा, दीप नाहटा, यश नाहटा थे।

रक्तदान के पश्चात उन्हें बैंक द्वारा विनियोग पत्र से सम्मानित किया गया एवं परिषद अध्यक्ष मुकेश राठौड़ ने सभी रक्तदाताओं एवं सेवियर ब्लड बैंक का आभार व्यक्त किया।

कोविड राहत रक्तदान - महाअभियान बैनर का अनावरण

जयपुर।

कोरोना महामारी के दरमियान तेरुप की ओर से विभिन्न ब्लड बैंकों के सहयोग से समय-समय पर रक्तदान शिविर जन-कल्याण के लिए आयोजित कर रही है। इसी क्रम में वृंदावन कॉम्प्लेक्स, सेंट्रल स्पाइन, विद्याधर नगर, जयपुर में आयोजित कोविड राहत रक्तदान महाअभियान बैनर का अनावरण परिषद के अध्यक्ष श्रेयांस बैंगानी, मंत्री सुरेंद्र नाहटा व संगठन मंत्री करण नाहटा की उपस्थिति में अरोमा सिंह ठाकुर I.G. (RPF-NWR) ने किया। उन्होंने बताया कि परिषद की ओर से ऑन कॉल जरूरतमंद बंधुओं की सहायतार्थ प्लाज्मा, प्लेटनेट्स व रक्त

का भी दान किया जा रहा है।

परिषद के अध्यक्ष श्रेयांस बैंगानी ने बताया कि इस कार्य में प्लाज्मा रक्त संयोजक करण नाहटा व रक्तदान शिविर संयोजक सोरभ बैद व प्रवीण भुतोडिया का श्री भी उल्लेखनीय रहता है।

रक्तदान शिविर

गुवाहाटी।

अभातेरुप के आयाम एमबीडीडी के तहत तेरुप द्वारा अपने सदस्य स्व० नवनीत सुराण की पुण्य स्मृति में रक्तदान शिविर का आयोजन मारवाडी हॉस्पिटल ब्लड बैंक में किया गया। नवनीत सुराणा उम्र ३७ वर्ष (पड़िहारा निवासी, सुपुत्र बजरंगलाल सुराणा) का आकस्मिक देहावसान हो गया था। तेरुप द्वारा नवनीत के भ्राता पुनीत सुराणा के निवेदन एवं पूर्व अध्यक्ष बजरंग सुराणा की प्रेरणा से यह रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। जिसमें ४४ जनों ने रक्तदान किया।

गौरतलब है कि इसमें ६ युगल जोड़ों ने रक्तदान किया। तेरुप अध्यक्ष वीरेंद्र सेठिया ने दिवंगत स्व० नवनीत सुराणा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सभी रक्तदाताओं को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरुप के संगठन मंत्री तरुण बैद, कार्यकारिणी सदस्य गौतम बैद, मुकेश बरडिया, सतीश भादानी, विकास नाहटा एवं अन्य सदस्यों का पूर्ण सहयोग रहा। ब्लड बैंक ने तेरुप को कोरोना के इस विकट स्थिति में रक्तदान शिविर आयोजित करने के लिए धन्यवाद दिया।

ऑक्सिजन मशीन अनावरण कोयंबटूर।

अभातेरुप की कोयंबटूर परिषद ने भारतीय जैन संगठन के संयुक्त तत्वावधान में कोरोना महामारी के इस विकट समय में आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के माध्यम से २ ऑक्सिजन मशीन का अनावरण ऑक्सिजन राहत मिशन के अंतर्गत किया। ये मशीनें समाज सेवा हेतु बहुत ही कम शुल्क में उपलब्ध करवाई जाएगी।

कार्यक्रम स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सम्मोच्चारण से हुई। आईबीजेएस के संगठन मंत्री राजेश पोखरणा ने अपने विस्तृत विचार रखे एवं प्रोजेक्ट की पूरी जानकारी प्रदान की तथा तेरुप के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष प्रेम सुराणा ने बधाई प्रेषित की। मशीनों का अनावरण सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा किया गया एवं बीजेएस के पदाधिकारियों द्वारा मशीन से संबंधित जानकारी दी।

बीजेएस, कोयंबटूर में अब तक १५ मशीनें पिछले एक महीने से सफलतापूर्वक चल रही हैं और देशभर में ऑक्सिजन राहत मिशन के तहत सैकड़ों मशीनें चल रही हैं। आभार ज्ञापन तेरुप मंत्री रोहित चोरडिया द्वारा किया गया। संचालन आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर प्रभारी निर्मल बेगवानी द्वारा किया गया।

◆ जीवन में जितना प्रमाद होता है, व्यक्ति उतना ही असफल होता है और जितना अप्रमाद होता है, व्यक्ति उतना ही सफल बनता है।

—आचार्य श्री महाश्रमण



सप्तम आचार्य डालगणी धर्मसंघ के विलक्षण और तेजस्वी आचार्य थे : आचार्यश्री महाश्रमण

उज्जैन शहर, २७ मई, २०२१

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी का आज सप्तमाचार्य परमपूज्य श्री डालगणी की जन्मभूमि उज्जैन नगरी के तेरापंथ भवन में पदापंग हुआ। पूज्यप्रवर पूज्य डालगणी के जन्म स्थान पर पधारे जहाँ पर समण सिद्धप्रज्ञ जी ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया। पूज्यप्रवर ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कुछ दोहों का निर्माण किया। पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी जिस पद पर विराजे थे उस पट पर विराजे।

उज्जैन वीर विक्रमादित्य और सिद्धसेन के साथ जुड़ा है। कल्याण मंदिर स्त्रोत की रचना यहीं हुई थी। अनेक इतिहास इस नगरी के साथ जुड़े हुए हैं। आज और एक इतिहास जुड़ गया है कि तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता यहाँ पधारे हैं।

महातपस्वी, महायशस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आज हम उज्जैन नगरी में अवस्थित हैं। अहिंसा यात्रा में मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में आना हुआ। उज्जैन हमारे तेरापंथ धर्मसंघ के सप्तमाचार्य परमपूज्य डालगणी के जन्म-भूमि होने के गौरव से मंडित है, गौरवान्वित है।

पूज्य डालगणी हमारे धर्मसंघ के एक विलक्षण आचार्य थे। मैं भिक्षु स्वामी के बाद के इतिहास में दो आचार्यों को विलक्षण मानता हूँ। एक तो आचार्यश्री डालगणी और फिर दसवें आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी को। इनका आचार्य पदारोहण विलक्षण हुआ है। सामान्य विधि है कि वर्तमान आचार्य ही भावी आचार्य की नियुक्त-मनोनयन करते हैं। वह नियुक्ति दो प्रकार से हो सकती है, एक प्रच्छन्न रूप में और प्रकट रूप में। हमारे धर्मसंघ में दोनों विधि से नियुक्ति हुई हैं।

प्रच्छन्न रूप में युवाचार्य की नियुक्ति करने वाले भी डालगणी ही हैं। इन्होंने अपने उत्तराधिकारी को दिखाया नहीं कि ये मेरे उत्तराधिकारी हैं। डालगणी इन दोनों विधा से हटकर आचार्य बने। उन्हें उनके पूर्वाचार्य ने नियुक्त नहीं किया। बाद में धर्मसंघ का प्रतिनिधित्व करते हुए बड़े कालुजी स्वामी रेलमगरा ने आचार्य के रूप में डालगणी के नाम की घोषणा की थी। यह उनके जीवन की विलक्षणता है। दूसरी विशेषता है कि तेरापंथ के इतिहास में Out of Rajasthan से आचार्य होने वाले एकमात्र डालगणी हैं। डालगणी ही एक ऐसे आचार्य हैं, जो राजस्थान से बाहर दीक्षित हुए हैं।

आचार्यश्री डालगणी का आचार्य काल लगभग १२ वर्ष का रहा था। हमारे धर्मसंघ में हम उन्हें एक तेजस्वी आचार्य के रूप में देखते हैं। विशेष अनुशास्ता के रूप में उनका

व्यक्तित्व रहा। उन्होंने मुनि अवस्था में कच्छ की यात्राएँ की। जो एक प्रभावशाली यात्राएँ संभवतः रही थीं। कच्छी-पूजा के रूप में वो विख्यात हुए।

व्यवहार की भूमिका पर देखें तो उज्जैन का अवदान है कि तेरापंथ को एक ऐसा साधु मिला जो आगे जाकर आचार्य बना। मैं उनकी दीक्षा स्थली इंदौर जाकर आ गया। आज उनकी जन्मभूमि पर हम अवस्थित हैं। उनकी महाप्रयाण स्थली लाडनू है, वहाँ तो हम बहुत रहे हैं। वहाँ उनके समाधिस्थल पर भी मैं गया हूँ। उनकी जन्म-स्थली आने का काम पड़ा है। मैं बारंबार परमपूज्य डालगणी का स्मरण करता हूँ।

पुनर्जन्म विकास होता है, जिसके कषाय क्रोध, मान, माया, लोभ प्रबल होते हैं उसका पुनर्जन्म होता है। डालगणी के जीवन प्रसंग को समझते हुए कहा कि बाह्य कष्ट भले ही आएँ पर साधु तो आनंद में रहता है। आपके सिद्धांत के अनुसार पुनर्जन्म नहीं है, पर हमारा सिद्धांत सही हुआ कि पुनर्जन्म है, तो आपका क्या हाल होगा?

पूज्य डालगणी एक प्रखर व्याख्यान देने वाले आचार्य थे। शरीर से अक्षम होते हुए भी उनमें व्याख्यान देने की क्षमता रहती थी। मैं डालगणी की विचरण भूमि कच्छ भी गया था। कच्छ में मुनि अवस्था में उनका प्रभावशाली विचरण हुआ था। मुनि डालगणी जी के वीरचंद भाई के साथ हुए घटना-प्रसंग को विस्तार से समझाया कि डालमुनि की बात का खंडन तो नहीं कर सकता। उनका तत्त्वज्ञान व सिद्धांत का ज्ञान अच्छा रहा होगा।

पूज्य डालगणी ने मुनि अवस्था में जितनी यात्राएँ कर ली उतनी यात्राएँ

संभवतः आचार्य काल में नहीं हुई। उज्जैन वह भूमि है, जहाँ गुरुदेव तुलसी ने वि०सं० २०१२ का चतुर्मास किया था और आगम संपादन से जुड़ा हुआ वह समय था। आचार्य महाप्रज्ञ जी भी सन् २००४ में उज्जैन पधारे थे। मैं उस समय था तो आस-पास पर इंदौर-उज्जैन नहीं आ सका था। मुझे झाबुआ जिला भेजा गया था।

हमारे उज्जैन के समण श्री मुनि-दीक्षा लेने वाले हैं। इनकी जन्मभूमि ही इनकी दीक्षा-भूमि संभावित हो गई है। ये ५७वें वर्ष में हैं। इतने दिन समण के रूप में सेवाएँ दी अब ऊर्ध्वारोहण होने जा रहा है। समण सिद्धप्रज्ञ जी भी खूब साधना-आराधना करते रहें। अच्छी से अच्छी सेवा देने की, सेवा करने की भावना रहे। पूज्यप्रवर ने स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं को गुरुधारणा स्वीकार करवाई।

पूज्य श्री डालगणी की जन्म-स्थली पर पूज्यप्रवर द्वारा समुच्चारित दोहे—

**डालचंद गुरुदेव का जन्म स्थान विशेष।
तेजस्वी गुरुदेव का स्मरण करें निर्याध।
उज्जैननी पावनपुरी, रहे सभी अकलेश।
पायें पावन प्रेरणा, सिद्ध बने सब काज।।**

**साधुवृंद है साथ में,
एक समण श्री साथ।
कृपा दृष्टि प्रभु की रहे,
महाश्रमण सिर हाथ।।**

पूज्यप्रवर के स्वागत में समण सिद्धप्रज्ञ जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। प्रवास व्यवस्था अध्यक्ष संजय मेहता, तेरापंथ युवक परिषद, महिला मंडल से डॉ० वीरबाला, तेरापंथ सभा से विनोद पीपाड़ा एवं ज्ञानशाला ने पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना की।

श्रमण सिद्धप्रज्ञ की बड़ी दीक्षा का आयोजन

रतलाम

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी ने नवदीक्षित साध्वी अवन्तिकप्रभा जी को छेदोपस्थापनीय चारित्र (बड़ी दीक्षा) ग्रहण करवाई तो मुनि दिनेश कुमार जी स्वामी ने रतलाम में नव दीक्षित मुनि सिद्धप्रज्ञ जी को छेदोपस्थापनीय चारित्र पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार ग्रहण करवाया।

मुनि दिनेश कुमार जी ने मंगल स्मरण करते हुए प्रथम बार बड़ी दीक्षा प्रदान करते हुए सर्वप्रथम गुरुदेव को वंदना की। दीक्षा का अर्थ होता है—व्रतों का संग्रह। मैं गुरुदेव के प्रति कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझे बड़ी दीक्षा देने का निर्देश दिया। चौबीस तीर्थकरों के शासनकाल में से प्रथम तीर्थकर और अंतिम तीर्थकर के शासनकाल में ही बड़ी दीक्षा होती है।

आज श्रमण सिद्धप्रज्ञ की सप्रतिक्रमण दीक्षा होने जा रही है। सामायिक चारित्र एक बार आता है। छेदोपस्थापनीय चारित्र एक बार आता है जो व्यक्ति निष्ठावान है, वह एकबार छेदोपस्थापनीय चारित्र स्वीकार कर जंदगी-भर अशुण रूप में निभाता है। मैं श्रमण सिद्धप्रज्ञ से कहना चाहता हूँ कि तुम्हारा छेदोपस्थापनीय चारित्र अशुण रहे। गुरु इंगित की आराधना करते रहें। गुरुदृष्टि में सुख सृष्टि होती है।

मैं पाँचों पदों को वंदना करता हुआ परम पूज्य का स्मरण करते हुए उनकी आज्ञा से, उनका निमित्त बनते हुए बड़ी दीक्षा ग्रहण करा रहा हूँ। मुनिश्री ने पाँच महाव्रतों एवं रात्रि भोजन विरमण जो साधु का छटा व्रत है, वो खोलकर विस्तार से समझाकर यावज्जीवन के लिए तीन करण-तीन योग से त्याग करवाए। अतीत में हुए दोष से निवृत्त करवाया। उसमें निंदा और गुहा करने का निर्देश दिया। इस तरह मुनि सिद्धप्रज्ञ जी को छेदोपस्थापनीय चारित्र में स्थापित किया। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने पाँच महाव्रत और छटा व्रत रात्रि भोजन विरमण को स्वीकार कर प्रत्याख्यान किए।

इस प्रसंग पर मुनि योगेश कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ में सर्व साधु-साध्वियाँ गुरु की आज्ञा में रहते हैं। गुरु की आज्ञा के बिना पत्ता हिलता नहीं है, और हिल जाए तो वो टिकता नहीं है। मुनि सत्यकुमार जी के निवेदन पर रतलाम आए हैं। मुनि दिनेश कुमार जी धर्मसंघ के दीपते संत हैं। मैं मुनि सिद्धप्रज्ञ के लिए तीन बातें ध्यान में रखने योग्य बता रहा हूँ—शुद्धि, सिद्धि और उपलब्धि परक। ये आराधक पद को प्राप्त करें, सिद्ध, बुद्ध बनें। साधु जीवन को प्राप्त करना अतुल्यतम उपलब्धि है।

मुनि हेमराज जी, मुनि शुभकरण जी एवं मुनि विवेक कुमार जी ने श्रमण सिद्धप्रज्ञ को अपनी मंगल शुभकामनाएँ प्रदान कीं। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने अपने सात दिन के मुनि जीवन के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि मुनि दिनेश कुमार जी प्रतिभाशाली संत हैं, आप पदों के पीछे काम करते हैं।

मुनि सिद्धप्रज्ञ जी को अपनी मंगलभावनाएँ प्रेषित करते हुए रतलाम सभाध्यक्ष अशोक दक, अतिथि पैलेस के पीयूष दक, अभातेयुप से पुनीत भंडारी, बचपन के मित्र पारस आंचलिया, ज्ञातीजन की ओर से अभय बोरदिया ने अपने-अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि ध्रुव कुमार जी ने कहा कि रतलाम से सत्य रत्न मिला है। लोगों का साधु-संतों के प्रति विशेष सम्मान का भाव होता है।

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव

उधना।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष संजय-समता बोथरा की शादी की २७वीं वर्षगांठ पर उनके निवास स्थान पर आयोजित किया गया। रक्तदान शिविर का शुभारंभ तेयुप अध्यक्ष अरुण चंडालिया, निवर्तमान अध्यक्ष संजय बोथरा, तेयुप मंत्री मनीष दक, एटीडीसी प्रभारी भगवतीलाल हिरण द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। तेयुप के मंत्री मनीष दक ने बताया कि परिषद द्वारा २४७ दिनों के अंदर यह आठवाँ रक्तदान शिविर आयोजित किया गया है। जिसमें मीरानगर, रामजीनगर, गायत्री सोसायटी, ठाकोर पार्क क्षेत्र के

रक्तदाताओं ने मानवता के लिए रक्तदान किया।

तेयुप अध्यक्ष अरुण चंडालिया ने बताया कि परिषद द्वारा उधना के सभी क्षेत्रों में रक्तदान शिविर का आयोजन निरंतर किया जा रहा है। रक्तदान शिविर में पूर्व अध्यक्ष अशोक बोहरा, वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ उधना मेवाड़ के महामंत्री देवेन्द्र बोकाड़िया, तेयुप कोषाध्यक्ष हेमंत डांगी, तेयुप निवर्तमान मंत्री ललित चंडालिया, संस्कार प्रभारी विकास कोठारी, अभातेयुप सरगम सहप्रभारी सुनील चंडालिया की विशेष उपस्थिति रही। तेयुप सदस्य ज्ञानचंद कांटेड, राकेश बोथरा, अजित दुगड़, वरुण बोथरा, गौरव सुराणा, विशाल

कोठारी उपस्थित रहे।

तेयुप द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में ३५ लोगों ने रक्तदान देने के लिए अपनी इच्छा व्यक्त की और उसमें २८ यूनिट परीक्षण के बाद लिया गया।

रक्तदान शिविर के साथ ही २४७ दिनों में २८४ यूनिट रक्तदान संग्रह किया गया। सूरत रक्तदान केंद्र की टीम ने रक्तदान शिविर में अपनी सहभागिता दर्ज कराई, उनके प्रति आभार।

समियाए धम्मे : मैं हूँ सामायिक साधक टी-दासरहल्ली।

अभातेयुप समस्त शाखा परिषदों के माध्यम से सामायिक कार्यशाला का आयोजन कर रही है। तेयुप अध्यक्ष मुकेश चावत ने बताया कि इसमें प्रतिदिन एक परिषद एक साथ एक समय एक सामायिक कर रही है। हर परिषद कार्यशाला का आयोजन स्थानीय स्तर पर करती है। इस वर्ष तेयुप दासरहल्ली ने द्वितीय बार इस सामायिक कार्यशाला का आयोजन किया।

वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए अपने-अपने निवास स्थान पर सामायिक कार्यशाला का आयोजन हुआ। इसमें एक साथ एक समय ३५ सामायिक कराई गईं। सामायिक संयोजक नीलेश गिलुंडया व तेयुप सदस्य एवं श्रावक समाज सहभागी बने।



केवल मनुष्य जीवन ही मोक्ष का मार्ग दिखा सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

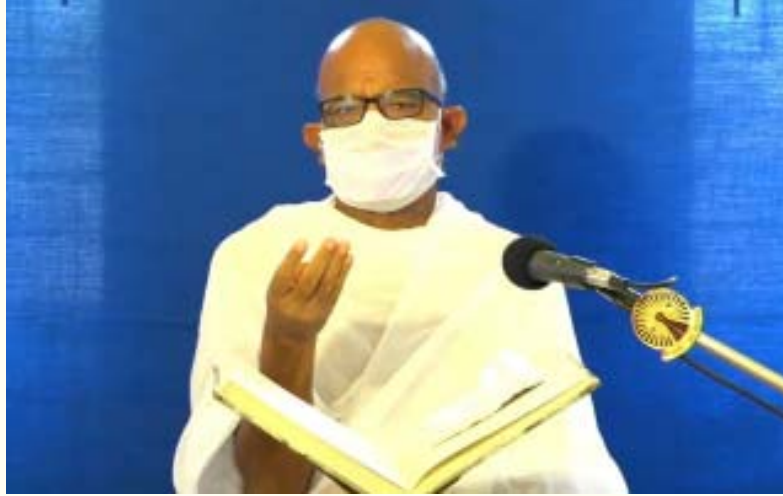
मनासा, ४ जून, २०२१

मालवा क्षेत्र काधार जिला जो राजा भोज की राजधानी थी। राजा भोज विद्वानों का बहुत सम्मान करता था। तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः मनासा पधारे। परमपूज्य ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमने मानव जीवन पाया है और मानव शरीर पाया है। मानव का जो ये स्थूल शरीर है, वह औदारिक शरीर होता है। औदारिक शरीर भले हाड़-मांस का पुतला हो, गंदगी भी इसके भीतर होती है, परंतु इसके बाद मनुष्य का यह शरीर बड़ा महत्त्वपूर्ण है।

विशेष महत्त्वपूर्ण शरीर इसलिए की इस शरीर के द्वारा मनुष्य साधना करके इसी जीवन के बाद मुक्तिश्री का वरण किया जा सकता है। जितनी उत्कृष्ट कोटि की साधना मानव कर सकता है, उतनी उत्कृष्ट साधना अन्य औदारिक शरीर वाले प्राणी नहीं कर सकते न वैक्रिय शरीर वाले देव या नारकीय जीव कर सकते हैं।

कई बातों में नारकीय जीवों और देवों के नियम कई-कई समान से होते हैं। नारकीय जीवों में भी अविज्ञान या विभंग अज्ञान होता है, देवों में भी अविज्ञान और कुछ विभंग अज्ञान होता है। नारकीय जीवों और देवों में उत्कृष्ट चार गुणस्थान हो सकते हैं।

नारकीय जीव हैं, वे मरकर वापस नरक में पैदा नहीं होते न देव गति में। वैसे ही देवता भी मरकर न देवगति में पैदा होते हैं, न नरक में। दोनों वैक्रिय शरीरधारी हैं। नारकीय जीवों से निकलकर कोई तीर्थंकर बन सकता है, तो देवों से भी आकर के कोई तीर्थंकर



बन सकता है। ऐसे अनेक समान नियम देवों और नारकीय जीवों पर लागू होते हैं। देव और नारक भी उस भव के बाद मोक्ष में नहीं जा सकते। मोक्ष में उन्हें जाना है, तो मनुष्य गति से ही जा सकते हैं।

मनुष्य का औदारिक शरीर मोक्ष ले जाने वाला बन सकता है। यह शरीर एक नौका है, जीव है, वो नाविक है। संसार का जन्म-मरण चक्र अरणव-सागर है। महर्षि लोग हैं, वो इस सागर को तर सकते हैं। कारण महर्षि इस नौका का बढ़िया उपयोग करते हैं। नौका है, नौका में बैठोगे तो पार पहुँचोगे। हर कोई आदमी नौका में नहीं बैठता, महर्षि ही बैठते हैं। वे इसमें बैठकर संसार समुद्र को पार कर मुक्तिश्री का वरण कर लेते हैं।

हमारा यह औदारिक शरीर है, उसमें एक स्थिति यह है कि इसमें अक्षमता आ सकती है। असमर्थता

कभी आ जाती है। शास्त्र में कहा गया है कि तीन रूपों में अक्षमता आ सकती है। पहली अक्षमता है, बुढ़ापा पीड़ित करने लग जाता है। उस से बुढ़ापा आना एक बात है, पर वो पीड़ित करने लगे वो अलग बात है।

दूसरी अक्षमता है—व्याधि। शरीर में व्याधि बढ़ जाए, ज्यादा उग्रता धारण कर ले तो अक्षमता बन जाती है। कोरोना जैसी बीमारी में हमारा अभय का, समता का भाव रह सके। स्वाध्याय, जप करते रहें तो धर्म का लाभ उठाया जा सकता है। तीसरी बात है—इंद्रियाँ हीन न पड़ें। इंद्रिय शक्ति क्षीण हो जाए, तो शरीर में असमर्थता आ सकती है।

गुरुदेव तुलसी ने कोलकाता और दक्षिण भारत की लंबी यात्राएँ अपने जीवन-काल में की थीं, कारण शरीर में सामर्थ्य था। हमारे नवदीक्षित साधु और साध्वी इनको नव जीवन मिला है, ज्यादा

काल तक समर्थ रह सके वे सामर्थ्य का सेवा में, अच्छे काम में उपयोग करें।

सेवा भी धर्म है, स्वाध्याय भी धर्म है। इनमें समय लगाया। सेवा के अनेक रूप हो सकते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने भी कितनी बौद्धिक सेवाएँ दी थीं। वृद्ध, ग्लान और शैक्ष की सेवा करना भी बड़ी सेवा है। तीन चाकरी कर संघ का ऋण उतर जाए, यह भावना रहे। अपने साझ में व दूसरों की सेवा की जा सकती है।

किसी की परोटना भी सेवा है। चित्त समाधि देना भी सेवा है। लोगों को बोध देना भी सेवा है। किसके लिए क्या सेवा करनी उचित है, वह भी महत्त्वपूर्ण है। हम हमारे शरीर बल का सेवा में, साधना में यथोचित उपयोग करें। हमारे नवदीक्षित साधु-साध्वी भी अपने सामर्थ्य का अच्छा उपयोग करने का लक्ष्य रखें, शुभेच्छा।

पूज्यप्रवर ने नवदीक्षित साध्वी को

छेदोपस्थापनीय चारित्र ग्रहण करवाते हुए पाँचों महाव्रतों एवं छठे व्रत रात्रि भोजन विरमण को विस्तार में समझाया एवं तीन करण-तीन योग से यावज्जीवन के लिए त्याग करवाया। अतीत में हुए दोषों की निंदा-गुहा करवाई एवं महाव्रतों में उपस्थित करवाया। नव दीक्षित साध्वी ने सरलमन से महाव्रतों एवं रात्रि भोजन विरमण व्रत को स्वीकार किया। नवदीक्षित साध्वी जी ने सभी संतों को वंदना कर सुखसाता पृच्छा की। वयोवृद्ध मुनि धर्मरुचि जी स्वामी ने नवदीक्षित साध्वी के प्रति संतों की ओर से मंगलकामना की।

शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी की स्मृति सभा

कुछ दिन पूर्व साध्वी कमलप्रभा जी का भीलवाड़ा में देहावसान हो गया था, हम उनकी स्मृति सभा कर रहे हैं। उनकी २०१० में गुरुदेव तलुसी के हाथों उदयपुर में दीक्षा हुई थी। उनके कई नातिले चारित्रात्माएँ हैं। वे रंगाई-सिलाई में निपुण थीं। साधना भी अच्छी की थी। वे हमारे धर्मसंघ की अग्रणी साध्वी थीं। ३१ मई को ११ मिनट के तिविहार संथारे में वे कालधर्म को प्राप्त हो गई थी। उनके प्रति मंगलभावना करते हुए मध्यस्थ भावना से चार लोगस्स का ध्यान करवाया। साध्वी कमलप्रभा जी को मैंने शासनश्री संबोधन से अलंकृत किया था। उनकी सहवर्ती साध्वियाँ भी खूब समाधि में रहें। अच्छी सेवा और साधना करती रहें।

मुख्य नियोजिका जी एवं मुख्य मुनिप्रवर ने भी शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी के प्रति अपनी भावांजलि अर्पित की।

अहिंसा यात्रा : वित्रमय झलकियाँ



साभार : अमृतवाणी